

Rg. N. B. 431.

श्रीमद्विजयानन्दसूरि सद्गुरुन्यो नमः

श्री

आत्मानन्द प्रकाश।

ॐ ॐ ॐ ॥ लग्धरावृत्तम् ॥ ॐ ॐ ॐ

लक्ष्मीवान् स्वीयलक्ष्मीं विसृजतु परमौदार्ययुक्तः सुकार्ये
विद्यावान् स्वीयविद्यां वितरतु परमादादरादै सुशिष्ये ।
लक्ष्मीविद्याद्यं तन्निवस्तु परमैक्येन सर्वेषु सत्सु
आत्मानन्द प्रकाशाद् भवतु सुखयुतो मर्त्यलोकोऽपिनाकः ॥१॥

पु. १८. | वीर सं. २४४८ ज्येष्ठ आत्म सं. २६ | अंक ११०

प्रकाशक—श्री जैन आत्मानन्द सभा—भावनगर,

विषयालुक्तमण्डिका।

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
१ समयनो सहुपयोग.	२८३	५ उपमिति भवप्रपत्त्य कथामांथा	
२ स्व आणाखाणु संपूर्णी स्थुल विचारणा.	२८८	६ डेटक्सिक वयनो.	२६७
३ शांतिमय श्रवननी धटना.	२८३	७ मुर्ख शीतड.	३००
४ धर्म—अद्वाणु यात्रिक ज्ञनोने अति अगलनी सूचना.	२८४	८ पर्त्तमान समाचार.	३०३

वार्षिक भूद्य ३. १) दोपाल भर्ती आना ४.

आनाह धीन्दीग प्रेसमां शाल शुलाभयं ह लक्षुलाभये छाप्यु—भावनगर.

आत्मानंह प्रकाशना यावता (अदारमा) वर्षनी अपूर्वभेद. श्री उपहेश सितरि ग्रन्थ—भाषापांतर.

श्री आत्मानंह प्रकाशना सुग्राहकोने आ अदारमा वर्षने माटे “ श्री उपहेश सितरि ” (अपूर्व उपहेश साथे अनेक इथाओ सहित) सुमारे लीश द्वारमनो भेटो अंश लेट आपवा माटे छपाइ तैयार येवेल छे, आवी सम्पत मौख्यवारी छनां हर वर्षे नियमित लेट आठला द्वारमनी भेटी भेटनी थुक (मासिकनु लवाज्जम कोइ पण् नहि वधार्या छनां) आपवानो कम भान आ संभारेन राख्यो छे, ते अमारा मानवंता आहडोनी ध्यान बहार द्वेष नही, तेनु झारणु भान लेन समाजने सस्ती किमते—ज्योऽग्नि किमते वांचनने। घोणो लाल आपवाना छेतुने धर्मनेज छे. नेथी हरेक लेन बधुओ आ भासिकना आहड यध तेना लाल लेवा साथे तान आताने उत्तेजना आपवा सुकुनु नहि. अमारा मानवंता आहडोने आ वर्षनी भेटनी थुक आवतामासथी वी. पी. थी भेडलवामु शइ थशे नेथी जे आहड महाशये अस्तारसुधी भासिकना आहड रखा छनां वी. पी. न स्वीकारवु छोय तेमषे लालमांज अमोने पत्र द्वारा जणाववुं डे नेथी नाहड तान आताने तुक्कशान न थाय; परंतु आर मास सुधी आहड रही अडो। राखी पञ्चवाडे भेटनी थुकनु लवाज्जम वसुल करवा वी. पी. थी भेडलवामां आवे, त्यारे पाई भेडली नकामो अर्थ करावी विना झारणु तान आताने तुक्कशान करवुं अने तेना द्वेष द्वार रहेवुं तेम पोरट आताने नकामी तकलीफ आपवी ते योग्य नयी. माटे लेओने आहड न रहेवुं छोय तेओओ अमोने स्पष्ट खुलासो लभी जणाववो एवी नभ सुखना करीये धीये.

जलही भंगावो.

भान थाईज नक्लेा सीलीडि छ.

जलही भंगावो.

“ श्रीहेवभृतभाणा प्रकरणु ग्रन्थ. ”

(जेमां पांच प्रकारनी परभात्मानी लक्षितो समावेश करवामां आवेल छे)

उपरोक्त ग्रन्थ जेमां परभात्मानी लक्षितनु स्वद्वप् १ पूळ लक्षितो प्रभाव २ आज्ञा लक्षित, ३ देव द्रव्य संरक्षणु लक्षित ४ भेदात्सव लक्षित, ५ तीर्थ यात्रा लक्षित ए पांच प्रकारनी लक्षितनु आगम प्रभाणे अने शास्त्रीय दृष्टांतो आपी शंका समाधान सहित यथार्थ स्वद्वप् आ अंथमां लभवामां आव्युं छे. आ अंथना लेखक पन्न्यासलु देवविजयलु महाराज छे. अंथ अरेखर मननीय अने प्रबु लक्षित करवा माटे एक उत्तम साधन अने आल अनद्वप् छे; तेमज प्राणीने भोक्ष भार्जे ज्वा माटे एक नाव दृप छे. आ अंथ प्रथमथी छेवट सुधी वांचवानी भास ललामणु करीये धीये. उंचा धूळीश काग्यो उपर सुंदर शुजराती टाईपथी ते प्रकट करवामां आव्यो छे. बाह्य अने अद्य तर अने प्रकारथी सुशोभित करवामां आवेल छे. पचीश द्वारम अशोंह पानानो आ अंथ जेनी किमत मान ३. १-४-० सवा पोरटेज न्युहुं. मान न्युज कोपी बाढी छे. जेठो तेमषे आ सभाने शिरनामे लभी भंगाववो.



�्री

आत्मानृष्ट प्रकाश.

अथ इह हि रागद्वेषमोहायभिन्नतेन संसारिजन्तुना अथ
 शरीरमानसानेकातिकटुकदुःखोपनिपात-
 पीडितेन तदपनयनाय हेयोपादेय—
 पदार्थपरिज्ञाने यत्नो विधेयः

पुस्तक १८] वीर संवत् २४४८ ज्येष्ठ. आत्म संवत् २६. [अंक ११ मे.

समयनो सहुपयोग.

(विकलहास भू शाह.)

“ Each day is a little life.”

“ अत्येक दिवस आपणु लुवननो एक अंश छे. ”

प्रिय वांचको ! गत देखभाँ ए अताववामां आ०युं कै भनुष्यनुं सैथी पहेलुं कृती०य शारीरिक स्वस्थ्यनुं रक्षणु करवुं ते छे. निरोगीता वगर त्रोह प्रकारनी उज्ज्ञति यथेष्ट समयमां कहि पछु थाई शक्ती नथी परंतु जे आपणु केवल स्वस्थ रहीने अन्य विषयो तरइ हुर्विक्ष करीये तो। पछु आपणु भनुष्य—लुवन सङ्कल थाई शक्तुं नथी केम्डे आ लुवन अनेक वातोनुं भिश्रणु छे अर्थात् आपणु सांसारीक सङ्कलताना अनेक अंगो छे जे आरोग्यता उज्ज्ञतिनुं भूणु छे तो। समयनो सहुपयोग करवो। ते पछु आत्मोनतिनुं एक प्रधान अने अत्यावरश्यक अंग छे.

जे आपणु ध्यान पूर्वक विचार करवुं तो आपणुने प्रतीत थशे कै ‘ समय ’ ज सैथी अधिक कीभती वस्तु छे परंतु जे खड़ कहेवामां आवे तो। आपणु त्रोह पछु वस्तुनो समयथी अधिक हुपयोग करता नथी; धण्णु भागे लोको धन संभांधी वातोमां कंधक विशेष विचार करे छे परंतु तेओ समयनी लेशपछु

२८४

श्री आत्मानंद प्रकाश।

हरकार करता नथी. समय धन करतां पणु अधिक मूल्यवान छे, नष्ट थयेलुं द०४
महेनत करवाथी पुनः प्राप्त थई शके छे, भुक्तायदी विद्या पुनः पठनथी पशु प्राप्त करी
शकाय छे. बगडेलुं स्वस्थ्य पणु योग्य औपधोपचारथी सुधरी शके छे परंतु गयेलो
समय गमे तेटला परिश्रमथी पणु कहि प्राप्त थई शकतो नथी. ईदांडनी राणी
ओलीजायेथेने भृत्यु समय निकट आव्यो त्यारे ते योली उठी के—जे केहि भने
ओक क्षणु पणु खावे तो तेने असंज्य होलत आपवामां आवशे परंतु पश्चात्ताप
करवाथी शुं वणे ? पोतानां ज्ञवन-काणमां तो तेणे ओवी सेंकडा ‘क्षणु’ नी जरा
पणु परवा करी नडेती हवे ते असंज्य होलत अने समस्त राज्य अर्पणु करे तो
पणु गयो समय पुनः केवी शीते प्राप्त थई शके ? जे कंध पणु मणी शके ओम होय
तो ते पश्चात्तापम ! ! समरणुमां राणो के समयनी यथार्थ किमत नहि समजवाथी
ओक दिवस आपणुने पणु वोर पश्चात्ताप करवो पडशे सत्य कहुं छे के—

“ The moments we forego
Eternity it self cannot retrieve.”

जे क्षणु आपणु नकामी गुमावी हड्ड्ये छीअे ते याई आपवाने संसारमां
केहि पणु समर्थ नथी, गयेलो समय योलाववाथी पाढो आवतो नथी, अरीहवाथी
पुनः मणी शकतो नथी, जे समय ओटलो अधो अहुमुल्य छे तो आपणु ओक क्षणु
पणु व्यर्थ ज्वा हेवी ज्वेहिअे नहि.

समयनुं महत्व आटलुं अधुं होवा छतां आपणु ते केवी रीते गुमावीअे
छीअे मात्र आपणी असावधानीथी. नुझो ! आपणु सवारने समय ओवा विचारमां
गुमावीअे छीअे के आ समयनुं काम आपणु पणवारमां करी लेशुं, अने अर्थ ओ
थाय छे के आपणी पासे सो इपीया छे जेमांथी आपणु पचास इपीया इंकी हृष्ट
शकीअे छीअे. सवारमां करवानुं कार्य बीजा समय माटे मूलतवी राज्यवाथी ते कार्यनी
सिद्धि संशयुक्त थाय छे ओटलुं ज नहि पणु आपणुमां आलस्यइपी शत्रुनुं
प्राप्तव्य वधतुं ज्य छे. वणु लेडो पोतानो समय पहेरवा ओढवामां अने पोतानो
स्वांग बनाववामां व्यर्थ गुमावे छे ? तेओ दिवस रात ते प्रकारनीज चिता राज्या
करे छे ओनाथी शो लाल थाय छे ? ते लेडो अवश्य बहुरथी सुंदर हेणावा लागे छे
पणु ओटलाथी कंध वणतुं नथी. शरीर कपडां वणेरे भाव्य देखाव उपर अवश्य
द्यान आपवुं ज्वेहिअे परंतु तेमांज आपणु ज्ञवननी सार्थकता न मानवी ज्वेहिअे.
पणु लेडो पोतानो धणो अरो समय फुका मरकरी करवामां गुमावे छे अने तेने
भनेविश्राम कहा करे छे ओ हीक नथी. उठाहरणुथी आपणुने लोजन समये योडुं
हूध पणु भणवुं ज्वेहिअे परंतु ओकला हूधथी काम चालतुं नथी. युवावस्थानो समय
आपणु आनंद करवामां तेमज भजा उठाववामां भराण रीते गुमावीअे छीअे.

समयना गदुपयोग.

२८५

आपणे आप्णे हिवस अहारनां कासें करवामां पसार थाय छे. थेंडे समय अडीं तहीं करवामां, थेंडे वर्षत गप्पा मारवामां, थेंडे समय आराम लेवामां ए रीते आपणे हिवस पसार थाई जाय छे परंतु याह राखुं ज्ञेहचे के—हिवस उंगे अने हिवस आथमे छे ए रीतेन आप्पुं लुवन पूर्णु थाई जशे.”

केटलाक लेडे कांध लाखवा वांचवानी धृच्छा थाय छे तो एकाह जेवुं तेवुं पुस्तक लहीने वांचवा लागे छे परंतु ज्यारे मन थाडी रहेलुं होय छे अथवा अन्य वातोमां लागेलुं होय छे त्यां वांचवाथी कशें लाल थतो नसी. वणी केटलाक लेडे नकामा पुस्तके वांचवामां समय गुमावे छे, केटलाक वांचवानी योग्य भद्रति नहि जाणुवाथी पोताना समय गुमावे छे. अनेक भनुष्यो एवा जेवामां आवशे के जेचो पोतानी वर्तमान अवस्थानी साथे लेश पण संबंध नहि धरावनारा पुस्तके वांच्या करे छे एम करवाथी कशें लाल थतो नसी.

एम आपणे अनेकदीते समय गुमावीचे छीचे. प्रथम आपणुने ते ओळुं मालुम पडे छे परंतु ज्यारे आपणे लुवनना समाप्ति-शिखर उपर चढीने जेहुचे छीचे त्यारे समयना अनेक नानां नाना कटका ज्यां त्यां नकामा वेराएला नजरे पडे छे. विचारण्यी वात छे के जे क्षणेने नकामी गण्याने आपणे ०५८ गुमावीचे छीचे ते नकामी नानी क्षणे. उपयोगमां लेवाथी डोळ उद्योगी पुढूष एकाह ऐ नवी लापाएं शीझी ले छे. आ आपणा देशमांज केटलाक एवा उद्योगी पुढूष जेवामां आवे छे के जे जेचो नोकरी करवा छतां अंथसंपादननुं कार्य करे छे अथवा अन्य व्यवसायनी साथे साहित्य-सेवा देशसेवा अने पशेपकार जेवा महापवित्र कार्यो करवा माटे समय ज्यावी ते कार्ये जनवे छे. एटलुं निश्चयपूर्वक कडी शकाय के संसारमां जेटला प्रसिद्ध विद्वान थया छे तेचोनी सझेवतानी कुंची वास्तविक रीते तेचोना समयना—प्रत्येक क्षणुना—सहपयोगमांज रहेली छे. तेचोमांना धण्णा तो डोळ प्रकारना विशेष स्वाभाविक अने जन्मसिद्ध गुण वगर डेवल पोताना अयश गविश-भथीज—हरेक क्षणुनो उचित उपयोग करीने पोताना नाम धतिहासमां अभर की गा छे. एवा महा पुढूषेना सुचरितोथी धतिहास शेळी रह्यो छे. नो तंच्याचे प्रत्येक क्षणुने तुच्छ समलुने तेने गुमावी हेत तो तेचो पोतानां समस्त लुवनमां कंध कार्य साधी शकत नहि ए निर्विवाद छे.

उपर्युक्त वातोथी एटलुं सिद्ध थाय छे के आपणे क्षणेक्षणुनो सहपयोग करवाथी आश्चर्यकारक कार्यो कुरी शकीचे छीचे. एनाथी एटलुं प्रकट थाय छे के आजकालना लेडे ‘कुरसह नसी’ एम कडीने डेवण पोतानुं आणस्य अदर्शित करे छे. ए कथन डेवण स्वार्थी लेडेने शेळा आपी शके छे. जे भनुष्यो ‘समय नसी मणतो’ एवी इर्याह कर्या करे छे तेमांना धण्णापरा तो वास्तविक रीते समयतुं

मूढ़यज्ञ जाणुता नथी. सभय अचाववा योहींने तो अवश्य अचावी शक्तय हो, मात्र ईच्छा होवी जेहुओ. धर्षा मनुष्यो एवा पण जेवामां आवे हो के जेओ. डोह साढ़ कार्य करवा भाटे 'उत्तम तडनी' राह जेया करे हो, ए पण ठीक नथी. सारां कार्यनो प्रारंभ करी हेवो जेहुओ; 'उत्तम तड' नी राह जेइ एगी रहेवाथी डेवण सभय नष्ट थाय हो. सभय तो एज उत्तम गण्याय हो के जेमां उत्तम कार्यनो प्रारंभ करवामां आवे. परंतु एक वात अवश्य ध्यानमां राखनी जेहुओ के कोह पण कार्य एकाचेक क्षणिक जेसमां आवीने करी नांभवु जेहुओ नहि. एम करवाथी कार्यनी सिद्ध थती नथी, कोह पण कार्य धीमे धीमे अने थाङु थाङु करो, परंतु ते हुमेशां दट्टापूर्वक करो; पधी तमारां कार्यनी सझलतामां कोह पण प्रकारनो संदेह रहेशे नहि. वणी कार्य करवाथी आपणुने ऐ प्रकारना लाल थाय हो, एक तो आपणु धनिष्ठ कार्य पूर्ण थाय हो अने भीनु आपणुमां करवानी योग्यता वधती जाय हो. बस, आटलाथी आपणु सभलु शकीओ शीओ के आणसु मनुष्य करतां उद्यमी मनुष्य उवी रीते अधिक कार्य करवा शक्तिमान थाय हो. आनु एक उदाहरण लहुओ. तमे कोह कामकाजमां रोकायला मनुष्य पासे जाइ तेने एक चिह्नी लभी आपवानु झेलेशो तो ते तरतज चिह्नी लभी आपशो; परंतु तमे एक आणसु मनुष्यने एक चिह्नी लभवा भाटे आणा हिवसनो अवकाश आपशो तो पण ते एक चिह्नी पण लभी आपशो नहि, तेने एक चिह्नी लभवा भाटे ऐ चार हिवस अथवा एक अठवाडीयु जेशो.

डोह पण कार्य पूर्ण करीनेज छोडवु जेहुओ, अधुरू मुझी देवाथी कार्य पूर्ण थतु नथी; एटलुंज नहि परंतु तेनाथी अधुरां कार्य करवानी अराण टेव पडी जाय हो. एक वर्षत एक वर्षमान पत्रना संपादके पेताना एक भिन्न लेखकने कहुं के "कुम लाई ! तमे प्रसिद्ध करवा भाटे एक पण लेख आपता नथी. रात्रि हिवस लाण्या तो अहु करो छो. " उक्ता लेखके ते संपादक पासे कागणनो एक दगदो लावी मूळयो. तेनी अंदर अनेक विविध विषयो उपर लेख लेखेला हुता, परंतु तेमां एक पाणु लेख संपूर्ण नहेतो. ते अपूर्ण लेखो वांचवाथी एटलु अवश्य मालुम पडतु हुतुं के लेअकमां अपूर्व विद्रता हुती परंतु ते शुं कामनी ! एक कागण उपर एक मधुरी कविता लभी हुती. भीजा कागण उपर विज्ञान संबंधी अपूर्ण लेख हुतो, एक स्थगे उन्नति विषयक एक लेख लगलग पुरो थवा आ०यो हुतो, एक भीजा पृष्ठमां 'कर्तव्य' उपर लेख लभवामां आ०यो हुतो, जेमां मात्र थाङु लभवु भाडी रहुं हुतुं. हुंकामां एक पण लेख संपूर्ण नहेतो. आ प्रमाणे काम करवाथी शो लाल ? एनाथी सभयनी हृत्या मात्र थाय हो. ए करतां साढ़ तो एज हो के कोह पण एक कार्य सारी रीते पूर्ण करी नांभवु.

समयनो सहृपयोगः।

२८७

हવे प्रक्ष ए रहो के क्या उपायथी अमूल्य वर्षत व्यर्थ ज्वा न पासे ? तेना ज्वायमां एट्लुंज कडेवुं पडशे के ने मनुष्यना ' प्रत्येक कार्य माटे समय अने प्रत्येक समय माटे कार्य ' निमित रહे छे तेनी एक क्षणु पणु व्यर्थ ज्वा पामती नथी. आ वात कडेवा सांखणवामां एट्ली सरलता छे तेट्ली अथवा तेथी अधिक कठिनता ते ग्रभाणु करवामां रहेली छे. धणु दोडेथी आ नियमिततानो पाठ शीघ्रवानु भनी शक्तु नथी. ए पाठ कठिन छे, परंतु समयना सहृपयोगनो आधार डेवण ए तत्वपरम रहेलो छे. एट्ला माटे हजारे मुश्केलीया अथवा बाधाया आवी पडे तो पणु ए पाठ अवश्य लछुवो पडशे. माझ एकज कार्य करो, परंतु ते तेना उचित अने नियम समये करवानी टेव राखो. ने मनुष्य नियत समये सर्व कार्ये करवानी टेव राखे छे तेने माटे सदाचारी भनवानी अधिक संभावना रहे छे, एवो मनुष्य पोतानी प्रतिज्ञानो कही पणु लंग करतो नथी. नियत समये कार्य करनार मनुष्यने हमेशां सुख-शांति भये छे, एट्ला माटे प्रत्येक समय माटे कांध ने कांध उपयोगी कार्य नियत करी राखो. ज्यारे तमारा घोवीस कलाक थाकडम व्यतीत थशे लारे तमारां भनने खराब वातो तरक्क दोडवानो अवसर भणशे नहि, तेमज तमारे हुःभित अथवा लज्जित थनुं पडे एवां कार्ये करवा समय भणशे नहि. परंतु एक वात छे; तमारे समयनी सारी रीते बहेंगायी करवी पडशे. तेनी व्यवस्था पूर्ण अने समुचित रीते करवी पडशे. वेगथी इरनाढ़ अङ्क एक महान यंत्रे चलावी शक्ते छे, परंतु ते यक्कमां जरा पणु तुरी पडे छे तो ते यक्क तेमज यंत्र तहन निःपयोगी थध पडे छे. एवीज रीते नियत समये कार्य करनार भाष्यस जे एक पणु भिनिट व्यर्थ गुमावे छे, तेना आणां कार्यङ्गी यंत्रेना कम तहन अगडी जाय छे.

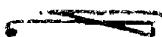
मनुष्यना सुखहुःभनुं कारणु एतुं भन छे ए वात सत्य छे. आपणुं भरिताप्को स्वाभाविक धर्म छे के कांधने कांध कार्य करतां रहेवुं. आपणु उपर डेवण एट्लुंज निर्भर छे के आपणु भनने सद्विचारो के अभद्रिचारो तरक्क दोडवावुं. के आनुनी लगाम ढीली भूक्वामां आवे छे ते तरक्क ए भनङ्गी घोडा होइ छे. आपणुं शरीर-रक्षणुनी खातर तेने सारा मार्ग चलाववुं ए आपणुं काम छे, धणु लागे अवकाशना समयमां अनेक मानसिक विकारो उसन थयां करे छे, एट्ला माटे ते समयने पणु कोई रीते उपयोगमां देवो. ज्ञेह्याए, ए समयमां आपणु चाहीचे तो कोई सन्मत्रनी मुलाकात वध शक्तीचे छीचे, कोई भनोरंजक रमत गमत करी शक्तीचे छीचे, कोई माझुतिक दृश्यनुं सुख अनुभवी शक्तीचे छीचे, कोई उपयोगी पुस्तक वांची शक्तीचे छीचे अथवा रक्तुर्ति अने स्वास्थ्य जनक कोई शारीरिक कार्य पणु करी शक्तीचे छीचे. प्रायः जेवामां आवे छे के एवा समयमां

(જ્યારે મનને કોઈ કઠિન કાર્ય કરવું પડતું નથી અને તે સ્વતંત્ર રહે છે ત્યારે) આપણાં મનની અંદર અચાનક કોઈ લાવપૂર્ણ અને સુખદાયક વિચાર આપોઆપ ઉમજ થઈ જાય છે, જે એકાન્તમાં એસી ઈચ્છા કરવાથી પણ ઉમજ થતો નથી, એટલા મારે એવા અવકાશના સમયમાં પણ કાગળ પેન-સીલ અવશ્ય સાથે રાખવા જોઈએ.

સમયનો સહૃપદોગ અનેક ઉપાયોથી કરી શકાય છે, પરંતુ એટલું લક્ષમાં રાખવું જોઈએ કે આપણા હૈનિક કાર્યક્રમનો વિલાગ કર્યા વગર સમયનો સહૃપદોગ થવો અસંભવિત છે. સમયનો સહૃપદોગ કરવાની એ એક સારી રીત છે કે પ્રાતઃ-કાળમાં જાગૃત થયા પછી ‘આજ આજા હિંસમાં મારે શું કાર્ય કરવાનું છે’ તેનો સંકલ્પ કરી લેવો જોઈએ, પછી રાત્રે સૂતી વખતે નિષ્પક્ષલાવથી એટલી આવોયના કરી લેવી જોઈએ કે ‘મેં સર્વ કાર્યો ઉચ્ચિત રીતથી ઉચ્ચિત સમયે કર્યાં છે કે નહિ ? જે નથી કર્યાં તો તેનું કારણ મારું આવશ્ય તો નથી ?’ આ પ્રકારનાં આત્મ-નિરીક્ષણુની ખાસ અગલ્ય છે, તેમકે તેનામાં ગુણ દોષ શોધી કાઢવાની અને આત્મોન્તતિ સાધવાની વિલક્ષણ શક્તિ રહેલી છે. અનેક લોકેનું જીવન આત્મ-નિરીક્ષણના અભાવથીજ હું ખાયક બની જાય છે. અતએવ જે તમારે વર્તમાન તેમજ ભાવી જીવન-સંચામમાં સફ્ફૂલતા પ્રાસ કરવાની ઈચ્છા હોય તો અસ્યારથીજ તમારે આત્મ-નિરીક્ષણનો અભ્યાસ કરીને એટલું જોઈ લેવું જોઈએ કે તમે હુંમેશા તમારા સમયનો સહૃપદોગ કરી રહ્યા છો કે હુર્પદોગ. સમયના મહત્વપૂર્ણ વિષયમાં નીચેનું વાક્ય હુંમેશાં ધ્યાનમાં રાખવા લાયક છે—

“ Dost thou love life ? then do not squander time, for that is the stuff life is made of. ” અર્થात् શું તમને તમારું જીવન જડાલું છે ? જે હોય તો સમયનો હુર્પદોગ ન કરો ; તેમકે તમારું જીવન સમયનુંજ બનેલું છે.

છેવટે મનુષ્ય-જીવનની સાર્થકતાના વિષયમાં એટલું કહેવું બસ છે કે આપણે ઈશ્વર અને મનુષ્યોં તરફ આપણું કર્તાંય બળવવું, આત્મ-નિરીક્ષણ અને આત્મ-શાસનની ટેવ પાડવી તથા આપણા સમયનો એવો સહૃપદોગ કરવો કે જેથી આપણે આપણાં કુદુંબ, સમાજ અને દેશને મારે કોઈ પણ રીતે ઉપયોગી બની શકીએ. વસ્તુતઃ એ મનુષ્યનું જીવન સફ્ફૂલ થાય છે અને એજ મનુષ્ય જીવન-સંચામમાં સફ્ફૂલતા પ્રાસ કરી શકે છે કે જે કાર્યોમાં પોતાનાં તન, મન, ધ્યાન, સમર્પણ કરી હોય.



स्वयंभाग्याभाषु संभंधी स्थुण विचारणा.

२८६

स्व एलभाषु संभंधी स्थुण विचारणा.

ले०—वक्ता नं हलाल लद्धुसाह वडोहरा.

लगवंत महावीर परमात्माएँ ज्ञावाना हितना भाटे इरभावेलुँ छे के हरेक ज्ञव पोते जे गतिमां उत्पन्न थयो छाय ते गतिमां कुर्दि हिशाथी आवयो अने कुर्दि हिशामां पाण्डे पोते ज्ञानो छे ? ऐनी विचारणा हुमेश तेषु करवी जेठाये. अने विचारणा करनारज खोतानुँ ज्ञवन शुद्ध भनावी शक्शे.

२ डेवण ज्ञानीयोये द३्य अने लाव ए ए हिशायोमां ज्ञवा स सारमां भ्रमणु करे छे, तेमांज तेयो उपने छे. अने विष्णुशो छे. एम खोताना ज्ञानथी जाएयुँ छे. ते प्रत्येकना अठार अठार लेह छे.

३ द३्य हिशानुँ ज्ञान साधारण रीते ध्रुणा माणसोने छावानो संलव छे. पुर्व पञ्चिम, दक्षीषु अने उत्तर ए चार मुण्य हिशायो छे. अभि, नैडत्य, वाव्य, अने धशान, ए चार विहिशायो छे. ए आठनी वच्यमां जे खाली लाग रहे छे. तेना ज्ञानीनी हृषिये आठ खाली हीशायो रहे छे. तेथी तेना आठ लाग थाय छे. एम आ लीर्धालोइकनी शेण हिशायो थाय छे. ए उपरांत एक अधोलोइकनी एक हिशा अने एक उर्ध्वलोइकनी एक हिशा ज्ञने विभग हिशा पाण्डु कहे छे. एम द३्य हिशाना अठार लेह थाय छे.

४ आ मनुष्य लवमां आपणी जनक भाताना गर्भमां आपणे ज्ञव उपर भतोवेली अठार द३्य हिशामांथी कुर्दि हिशामांथी आवीने उत्पन्न थयो ? ऐज महत्वनी विचारणा छे.

५ आपणुने आ मनुष्य लवमां सामान्य रीते भति अने श्रुतज्ञान अथवा भति अने श्रुत अज्ञान ए चारभांथी डोहि ए लेद्दुँ ज्ञान छे. जे ज्ञावाने सम्यक्त्व उत्पन्न थयेलुँ छे, अथवा ज्ञेयने सम्यक्त्व पुर्व लवथी चालतुँ आवेलुँ छे, ते ज्ञावानुँ ज्ञान, भति अने श्रुत ज्ञानीनी डोटीमां आवी शडे छे. ते सिवायनानुँ भति अनेश्रुत ए भति अने श्रुत अज्ञानीनी डोटीमां आवे छे. ज्ञव सम्यक्त्ववान छे के नहीं, ए विशिष्ट ज्ञानीयो सिवाय धीज्ञ ज्ञाणी शक्ता नथी. आपणुने ज्ञतिस्मरणु ज्ञान नथी. तेम हालना सम्यमां अवधि, मनःपर्यव अने डेवणज्ञानीयोनो अखाल छे. तेथी आपणे आ अठार हिशामांथी कुर्दि हिशामांथी आवी भाताना गर्भमां उत्पन्न थया ए ज्ञाणी शक्ता नथी. आपणे आपणी जन्मभूमि के रहेवाना स्थानथी मुसाइरी निकाली थीने स्थयो ज्ञाने छीये. त्यां आपणुने ग्रन्थ पुष्टवामां

૧૯૦

શ્રી આત્માનંહ પ્રકાશ.

આવે છે કે આપ આજે કયાંથી પદ્ધાર્યો? આપણે ઉત્તર આપીશું કે અસુક સ્થળેથી. આ પ્રમાણે વ્યવહારમાં વર્તવામાં આવે છે. આપણે આપણી જનક માતાના ઉદ્દરમાં આવી હાખલ થયા અને ગર્જકાળ પુરે થયા પછી આપણો જન્મ થયો. તેથી આપણા માતા પીતા અને કુદુંબીજનો ઘણા હું પાયા. આપણે ઉમરે અને બુદ્ધિ વિગેરેમાં વધતી ગયા. વ્યવહારિક અને ધાર્મિક ડેળવાણુને લીધી વિદ્યાલ્યાસ છોડી ધંધામાં હાખલ થયા. લચ કરી સંસારમાં લેડાયા. ધંધાનો અને કુદુંબનો બધો લાર માથે લઈ હુનિયામાં આગળ વધીએ છીએ એમ માનવા લાગ્યા અને આટલી ઉમરે પહોંચ્યા છતાં લાંસુધી આપણુને કોઈ પુછતું નથી કે ભાઈ તમે આ મનુષ્ય જલમાં ઉત્પન્ન થઈ અમારા પ્રત્યેકના સભંધમાં આવ્યા છો. પણ આપ ઉપર બતાવેલી અઠાર દ્રોય દિશામાંથી કઈ દિશામાંથી સુસાઙ્કથી કરી અહિં પદ્ધાર્યો છો? આપણો પુર્વનો જવ પુર્વનું રહેઠાણું કયાં હતું તેમ આપણે પણ જૂલી ગયા છીએ. દેવ, મનુષ્ય, તિર્યંચ, અને નરક, એ ચાર ગતિ પૈકી કઈ ગતિમાંથી અને કઈ દિશાથી આવી ઉત્પન્ન થયા છીએ.

૬ આપણે કોઈ ડેકાણે જઈએ છીએ. ત્યારે ઘરના ણીજા માણુસોની ખખર અંતર પુછવામાં આવે છે, તેમ આપણુને આપણા કુદુંબી જનોની શીકર ચિંતા રહ્યા કરે છે. અહીં આ જલમાં ઉત્પન્ન થયા પછી નથી તો આપણુને આપણા પુર્વ જલમાં સંગાચોની ચિંતા અને નથી કોઈ ખખર પુછતું કે ભાઈ પુર્વ જલમાં આમ-જનો જ્ઞેમ કુશળ છે? સુસાઙ્કરીએ નિકળેલો પ્રાણી આગળ કયા સ્થળે જવાનો છે, તેની વિચારણું કરે છે. આ મનુષ્ય જવાનું આચુષ્ય પુરુ થયા પછી આપણે ણીજા કોઈ સ્થળે જવાનું છે. એ વાત નિશ્ચયના ઘરની છે. છતાં આપણે પોતેજ કોઈ દીવસ અને વિચાર કરતા નથી કે આપણે કયે સ્થળે જવાનું છે. આ પ્રમાણે અઠાર પ્રકારની દ્રોય દિશા પૈકી કઈ દિશાએથી આપણે આવ્યા અને કઈ દિશામાં જવાના તેની વિચારણું હુમેશ કરવી નેઈએ.

૭ દ્રોયદિશા સિથાય ભાવ દિશાએ પણ છે. અને તેના પણ અઠાર લેદ છે. તે નીચે પ્રમાણે.

૮ ચાર પ્રકારના મનુષ્ય ૧ કર્મલુભિ ૧ અકર્મલુભિ ૧ અંતરદ્વીપ ૧ અને સસુર્છિભ.

૯ ચારકાય ૧ પૃથિવ-૧ અપ-૧ તેઉ-અને ૧ વાઉકાય.

૧૦ વનસપતિના ચાર લેદ-અંગધીજ-મુઢધીજ-સ્કંદધીજ અને પર્વધીજ.

૧ દેવગતિ અને

૧ નરક ગતિ

૧૮

સંખ્યાણખાણ સંબંધી સંશુદ્ધ વિચારણા.

૨૮૭

૭૫૮ પ્રમાણે ચૌહ રાજલોકની અંદર રહેલા સંસારી જીવો અથાર પ્રકારની ભાવદિશામાં હુમેશાં ભ્રમણું કરે છે. જીવો એ પ્રકારના છે. એક સંસારી જીવ અને ખીજન મુક્તા જીવ. જેઓ સર્વથા કર્મ મળથી રહીત થઈ લોકાંતે સિદ્ધ સ્થાનમાં આવિ અનંત જીવો રહેલા છે, એવા મુક્તા જીવોને ઉપરની દ્વય અથવા ભાવ દિશા પૈકી કેચું પણ દીશામાં સુસાક્ષરી કરવી પડતી નથી. તે શીવાયના સંસારી જીવો ચૌહરાજલોકની અંદર અથાર દ્વય દિશામાં અને અથાર પ્રકારની ભાવ દિશામાં ગતિ આગતિ કર્યા કરે છે. તો પછી આપણે આ ભવમાં ઉપરની અથાર પ્રકારની ભાવદિશા પૈકી કેચું દિશામાંથી આવી ઉત્પત્ત થયા છીએ. અને આ ભવનું આયુષ્ય પુરુષ થયા પછી કેચું દિશામાં આપણે જીવાના છીએ એની વિચારણા પણ આપણે હુમેશા કરવી જોઈએ. આવા જીવાના જે પુરુષ હોય તેજ અરેખરો આત્મવાહી, લોકવાહી અને કિયાવાહી છે એમ જાણું. એમ જગતંત માહાવીર પરમાત્મા આચારાંગ સુત્રમાં કહે છે.

૮ ઉપર આપણે વિચાર કરી ગયા છીએ કે આપણું વિશિષ્ટ પ્રકારનું જીવન નથી તેથી આપણે જાણુતા નથી. તેમજ વિશિષ્ટ પ્રકારના જીનીઓના અભાવના દીધે પણ તે જાણુવાનો જોગ અને તેમ નથી. તો પછી એ સંબંધિ આપણે વિચાર કેવી રીતે કરી શકીએ એ પણ એક પ્રશ્ન છે.

૯ આ દ્વય દિશા અને ભાવ દિશા સંબંધી સ્પષ્ટ અને ચોપું જીવાન આપણું થઈ શુદ્ધ વિચારણા કરી શકીએ એ બનનું રો અથક્ય છે. પણ આગમનો આક્રય લઈએ તો એ સંબંધિ કાંઈ અનુમાન કરી શકીએ.

૧૦ જીવ વિચાર, નવતત્ત્વ, કર્મઅંથ વીગેરે પ્રકરણોનો અસ્યાસ કરી મનુષ્ય ગતિમાં કયા કયા દંડકમાંથી આવી શકાય છે તેની વિચારણા કરીએ તો આપણું અનુમાન થઈ શકે કે અમુક ભાવદિશામાંથી આપણે આ ગતિમાં આવેલા હોવા જોઈએ. મનુષ્ય ગતિ બધના કારણો કયાં કયાં છે, તેનો વિચાર કરવાથી એ પણ અનુમાન થઈ શકે કે આપણે પુર્વ ભવમાં અમુક પ્રકારના શુભકર્મ કરેલાં કે જેથી મનુષ્યની ગતિ અને ઉત્તમ કુળ તત્ત્વ હેવણુરુધ્રમની સારી જોગવાઇવાળી સામચી પામી શક્યા છીએ. તેજ પ્રમાણે જીની માહારાજાએ મનુષ્ય અને હેવગતિના બધના જે કારણો બતાવેલા છે, તે કારણોનું દ્વય અને ભાવથી સેવન કરીએ તો વખતે તેવી ગતિમાં જીવાને સમર્થ પણ થઈ શકીએ !

૧૧ પણ આ દ્વય દિશા અને ભાવ દિશા સંબંધીના પ્રશ્નો આટલી ઉમરમાં કોઈપણ વખત મનમાં ઉત્પત્ત થયા નહીં. એ કેટલી અજ્ઞાનતા અને મોહનીય કર્મનો કેટલો પ્રથમ ઉદ્ય ? હણુ આપણો આ ભવ પુરો કરી ચૌહ રાજલોકમાં ઉપરની દ્વય અને ભાવ દિશામાં સુસાક્ષરી કરવા જીવનું છે. એ નક્કી છે, છતાં કોઈપણ વખત એ

૨૯૨

શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ.

સંબંધી મનમાં વિચાર પણ ઉત્પલ્લ થતો નથી. એ કેટલી સુધ્દતા ? એક સાધારણ સુસાક્ષરી કરવી હોય છે, તો અગાઉથી પત્ર કે તારથી અખર આપીએ છીએ કે ફ્લાણા ફીલસે ફ્લાણા વખતે હું એકલો અથવા આટલા માણુસા સાથે આવવાનો છું. અને અસુક અસુક તૈયારી કરી રાખનો કે હરકત પડે નહીં. તેની સાથે સુસાક્ષરીમાં હરકત પડે નહીં રો માટે કંપડાં, ભાયું. પાથરણુંની જોગવાઈ (એડીંગ) નોકર, રસોઈયા વીજેરેની જોગવાઈ કરી સુસાક્ષરી સુખરૂપ નિવડે તેના માટે બનવી કાળજી રાણીએ છીએ. છતાં આપણે લવિધ્યના અનંતકાળમાં લાંખી સુસાક્ષરીએ જવાનું છે, તે સંબંધી મનમાં કોઈ વખત કંઈ પ્રક્ષ પણ જોસો થતો નથી. એ અજ્ઞાનતા શિવાય બીજું શું સુચ્યવે છે ?

૧૨ અરેખર આ દ્રવ્ય દિશા અને ભાવ દિશાની વિચારણા વિના આટલી ઉમર પસાર કરી તેના માટે હુંએ ઘણોજ પ્રક્ષીતાપ થાય છે.

૧- પરમોપકારી નિષ્કારણ જગતના બાંધુ તુલ્ય ગીતાર્થમુનિ માહારાજાએ એ પરોપકાર બુદ્ધથી આ સંબંધી ઉપરેશ આપી આ દ્રવ્ય દિશા અને ભાવ દિશાનું સ્વરૂપ સમજાયું, ત્યારથી આ પ્રશ્નો મનમાં ઉદ્ભબ પામ્યા છે. પણ વિશિષ્ટ જાણી-ઓના સમાગમ શિવાય એ સંબંધી સ્પષ્ટ નિરાકરણ થાય તેમ નથી. પણ એક વાત ધ્યાનમાં આવી છે. તે એવી છે કે, નરક અને તિર્યંચ ગતિના બધના જે કારણો અને આર્ત તથા રૈદ્ર એ એ ધ્યાનનું જે સ્વરૂપ બતાયું છે, તેનું સેવન થાય તો એ એ ગતિના બધાં પડતો અટકાવવાને શક્તિમાન થઈ શકું. પણ અનાદ્યકાગથી આ માહારા જીવને એ કારણો અને ધ્યાનનો અભ્યાસ પડેલો હોવાથી હું તેને રૈકાવને પ્રયત્ન કરું છું તો પણ તે વારંવાર મહારી પાસેથી ખસતા નથી. અને તેથી હું વખતેવખત નિરાશ થઈ જાઉં છું. પણ એટલાથી નિરાશ થઈ એસી રહેવાથી તો ઉલ્લી નુકશાની થશે. જો એ આર્ત અને રૈદ્ર ધ્યાનને અટકાવવા હોય અને નરક અને તિર્યંચગતિમાં જવાના કારણો સેવનથી બયલું છે, એવી અંતઃકરણમાં તીવ્ય લાગણી હોય તો એકજ ઉપાય છે, તે એ કે તેના પ્રતિ પક્ષી ધ્યાન ધર્મ અને શુક્લ ધ્યાનનું સ્વરૂપ સમજાયું જોઈએ. અને મતુપ્ય તથા દેવગતિ લાયકના અનેક કારણોની સેવનાનો અભ્યાસ કરવો જોઈએ.

શ્રીમહૃ દેવયંકળ મહારાજ ભાવીશમા તીર્થીકર શ્રી નેમિનાથજીના સ્તવનમાં કહે છે કે,

અપ્રસ્તતારે ટાણી મશસ્તા; કરતાં આશ્રાવનાશેજુ ”

સંવર વાધેરે સાધે નિર્જરા; આતમ ભાવ પ્રકાશેજુ ”

આપણા આત્માને ઊંચકાઠીમાં લેઇ જવાની ભાવના હોય તો ગીતાર્થ પુર્વીચા-યેંએ પોતાના અપૂર્વ જીવનના અભ્યાસના અતુલબનો જે ઉપરેશ આપણું આપી

સાંતિમય જીવનની ઘટના.

૨૬૩

ગથા છે, તે ઉપરેથનો અમલ આપણે કરવો જોઈએ. આપણે તત્ત્વજ્ઞાનનો અભ્યાસ નહીં કરતાં નવીન શોધપોળાની બ્રમણામાં પડીએ છીએ. તેના કરતાં સમર્પણાનીએ પોતાના અનુભવથી આપણને ને રસ્તો બતાવેલો છે, તેનું જીબ મેળવી તેનો અમલ આપણે કેમ કરવો નહીં જોઈએ ? હું તો મહારા પોતાના માટે એવાજ નિર્ણય ઉપર આવ્યો છું કે, જમાનાના અસરંગત પ્રવાહમાં તણુંબાના બદલે મહુન ગીતાર્થ પુર્વાચાર્યોએ ને ઉત્તમોત્તમ દિશાએએ મુસાફરી કરવાને પોતાનું જીબ અને અનુભવના અંગે બતાવ્યું છે, તેજ દિશાએ યથાશક્તિ મુસાફરી કર્યા કરવું કે પરિણામ સારુ આવશે.

આત્મસ્વરૂપની ઓલખાણમાં આ દ્રોય અને ભાવદિશાની વિચારણા ધંડી ઉપયોગી છે. એમ શાંત ચિત્તથી અને આત્મહિત બુદ્ધિથી વિચાર કરનારના ધ્યાનમાં આન્યા સિવાય રહેશે નહીં. અને એ દ્રોય તથા ભાવદિશાએ મુસાફરી કરવાનું બંધ કરવાનો એજ શરૂઆતનો જીપાય છે.

સાંતિમય જીવનની ઘટના.

(ગઝલ)

જીવન મંત્રો તણું નાદો, સુણી ચૈનન્ય હૃદૈ છે;	
ભુલી જીવન તણું કલહો, હૃદ્ય એ શાંતિ જીદૈ છે.	૧
અહો ! એ એહ જીવનના, કદી હરે શું થાવાના;	
નિરાશા શું ધરી રાણી, જીવન સંધળું શુમાવાના.	૨
નિરાશામાં રહી આશા, છુપાઈ વિશ્વની થડમાં;	
હૃદ્ય એ આશથી ધખકે, વિભૂતિના વિમળ પડમાં.	૩
જીવનમાં શાંતિ જે ધરશો, અશાંતિ શું હરી જશો ?	
— અશાંતિ શાંતિમાં પલટઠ, હૃદ્ય શું વેગમય થાશો ?	૪
હળરો વિનની વચ્ચે, પ્રહારો સર્વ એ પડતાં;	
જીવન સંગીત પ્રકટાવી, પ્રભુતામાં સહા ચડતા.	૫
વિકટ વિધનો અને કષ્ટો, અનાવે શુદ્ધ જીવનને;	
ધરી એ આત્મના તત્ત્વો, જમાવે રનેહ ઉપરનને.	૬
પરમ સૌંદર્ય પ્રકટાવી, જીવન સદ્ગારના પ્રેરી;	
અમૂલી આત્મ શાંતિના, કણ્ણો જ્યોતિ વિષે વેરી.	૭
જીવનની બંધતા પામી, સહા આત્મા વિષે રાચી;	
કરી સત્કૃત્ય જીવનમાં, પરમ પહે મોક્ષમાં ગામી.	૮
કાંતેખાંડ જવેરલાઠ.	

ધર્મ-અધ્બ્રાહુ યાત્રિકજનોને અતિ અગત્યની સૂચના.

લેખક-સદગુણાતુરાણી કર્પૂરવિજયજી. (સિદ્ધક્ષેત્ર)

આખા વર્ષ દરમીયાન અનેક જૈનભંડુઓ અને ફળોને શરૂઆતી, ગિરનાર, આથ્યુજી અને શિખરજી પ્રમુખ કંઈક નૈન યાત્રાસ્થળોને લાલ લેતા હીસે છે. પવિત્ર રજકણોથી વ્યાપે વાતાવરણુંબાળાં તીર્થસ્થળોમાં દુનીયાની ખટપટ મૂકી શાન્ત ચિત્તથી અધિક શાન્તિ મેળવવા માટે જ્વાની સફભાવના સહુ યાત્રિકોના દીલમાં ખુબ વસવી ઘટે અને એ મુજબ આચરણ કરવામાં આવે તો સોબસા તેઓ પોતાનો પ્રયાસ સઝળ કરી શકે ખરા. આવો વિવેક યાત્રાના રસિયા સહુ યાત્રિકોએ જરૂર શિખી લેવો જોઈએ. એથીજ યાત્રાની સઝળતા લેખાય.

૧ ન્યાય-નીતિ-પ્રમાણિકતા, કૃતજ્ઞતા, વડીલોની સેવા, ખાળ અચ્ચાદિકની યથાર્થ સંભાળ, સુદૃક્ષિકાયતા, સદગુણી પ્રત્યે વિનય-બહુમાન, ગંભીરતા, શાન્તતા, લંજન, દયા-કેમળતા, સરલતા (અંતઃકરણની શુદ્ધિ-નિષ્કર્ષ વૃત્તિ) સંતોષ-નિર્દોષતા, મધ્યસ્થતા, સત્યપ્રિયતા, દીર્ઘદર્શિતા, પરોપકાર રસિકતા, કાર્યદક્ષતા અને કામ, કોષ, મોહ, મહ મત્તસરાદિ દુર્ઘણુને હર કરવાનું કાયમ લક્ષ રાખવા વડે સુયોગ્યતા સંપાદન કરી, વીતરાગ પ્રલુની પવિત્ર આજાને લક્ષમાં રાખી, તીર્થ યાત્રાદિક ધર્મકરણી ડેવળ કેવ્યાણ્યાર્થી કરવી ઘટે છે. સહ વિવેક વડેજ સ્વહિત સાધન કરેલું સઝળ થાય છે.

૨ યાત્રા પ્રસંગે ડેાઇ લુબને નાહુક ત્રાસ ન થાય તેલું લક્ષ અવશ્ય રાખવું ઘટે. જયણા રહિત જતાં આવતાં લુબ જંતુઓની વિરાધના અવશ્ય થાય તે સમજુ રાખવું જોઈએ

૩ લોણા માત પિતાઓ પોતાના ખાળખચ્ચાઓને સાથે લઈ યાત્રા કરવાન્ય લ્યારે તેમને લગારે દુબદ્ધા વગર સાચવી રાખવાની તેવડ (શક્તિ, હોય તો હીક નહીંતો આળખચ્ચાને અસદ્ધ ત્રાસ થાય તે તો હીક નહીંજ).

૪ ભાઈઓ અને ફળોને યાત્રાર્થી જતાં આવતાં રખે પગને ઘસાડો લાગે એવા ભયથી દેખાડેખી કંતાનના ખુટ જેડા પહેરવા નાહુક લલચાઈ જાય છે તેથી લુબ-જંતુઓની રક્ષા પણ પળતી નથી અને પવિત્ર તીર્થરાજની સ્પર્શના કરવાનો યથાર્થ લાલ લેવાતો નથી. શોખની ખાતર તો તેમ કરવું નજ ઘટે. ખુલ્લા પગે ચાતવાથી સાચવીને ચાલતાં સહેને લુબદ્ધા મળે છે અને અનેક પ્રકારના રોગ પણ હુર થાય.

૫ કેટલાએક મુખ ભાઈ ફળોને શ્રીમંતાદ જાણવા માટે ગમે તેટલા પેસા

યાત્રિક જનોને સુચના.

૧૫૪

અર્થી ડેણીથીજ યાત્રા કરવા હોરાઈ જય છે. નવાણું જાત્રા કરે છે. દિવસમાં એ નજુ જાત્રા કરીને પૂર્ણી કરે છે. ડેણીવાળાને ટોડાવે છે અને તેમને સરપાવ આપે છે આ બધાનો અર્થ શે? એથી કદ્યાણું કેટલું? તે કોણું કદ્યાણ શકે? આ રીતે નકારું ઉત્તોજન આપવાનું પરિણામ કેવું આવે છે? તેનો જ્યાલ મુખ્ય જનોને કયાંથી આવે? વળી શત્રું જય જેવા તીર્થની યાત્રાનો પરમભાવના સહિત બને ત્યાં સુધી અષ્ટુંઘાણું પણે જવા યુક્ત યાલીનેજ કરવી ધટે. ઇક્તા માંદલા અને તેવળા અશક્તાનેજ માટે ડેણી વગેરે અષ્ટુંઘાણું હોઈ શકે.

૬ જ્ઞાનો પણું હેખાહેખી કંતાના બુટ વિનાસાંકોચે વાપરે છે. તે પ્રથા સુખ શીલતાનેજ વધારનારી છે. અસદ્ય તાપ વખતે કદાચ તેનો ઉપયોગ થતો હોય તો જુદી વાત, પણું આમાં સ્વેચ્છા મુજબ ચાલવાનું બને છે. કંઈક સાધુ સાધ્યાંએ પણું સ્વેચ્છાથી તેનો ઉપયોગ કરે છે. એથી લજજા-મર્યાદાનો સહેજે લોએ થતો જય છે.

૭ નવાણું યાત્રાના અનુભવમાં સુખશીલતા વશ એવી છુટ મુક્ખામાં તેનું આ અનિષ્ટ પરિણામ આપતું જણાય છે. યાત્રાની સફેદતા ધર્યાનારે સુખ-શીલતા સેવવીજ ન ધટે. બાળ જીવો હેખાહેખીજ વધારે કરે છે.

૮ તીર્થયાત્રા કરવા જનારા જે સ્થાવર અને જંગમ તીર્થનો અર્થ યથાર્થ સ્થળજીતાજ હોય તો શત્રું જ્યાદિક સ્થાવર તીર્થની યાત્રા પ્રસંગે સહેજે ભળતો. જંગમ તીર્થઢ્રિપ સુવિહિત સાધુના સમાગમનો લાભ કેમજ ચુકે? આવે અવિચેક સુજ યાત્રિકોને કરવો નજ ધટે. જંગમ તીર્થઢ્રિપ સંત સમાગમ કદ્ય-વૃક્ષની શીતળ છાયા જેવો ભારે સુખદાયક બને છે, એ વાત વિસરી નહીં જતાં કાયમ યાદ રાખવી જોઈએ, જંગમ તીર્થ સમાગમમાં આવનારને ભારે ઉપકારક થાય છે.

૯ તીર્થયાત્રા કરવા જતાં જેમ ભાવથી છરી પાળવામાં આવે છે તેમ તીર્થ-યાત્રા કરતાં પણું પાળવી ધટે છે. તીર્થને લેટવા જતાં જેવો ભાવ હોય તેવો કે તે કરતાં અધિક ભાવ એ તીર્થને સાક્ષાત્ લેટતાં હોવો ધટે. તેને બદલે સુખશીલ બની અવિધિ હોય સેવવો ચુક્તા લેખાય નહીં.

૧૦ કેટલાક મુખ્ય જાત્રાણો સહજ વાતમાં ધમધમી જય છે. નજીવી વાત વાતમાં કલેશ કરી એસે છે, તેમણે શત્રુંન્ય મહાત્મ્યમાં વર્ષાવેલ કંડુ રાણું દૃષ્ટાંત વાંચી વિચારી પોતાની પરિણુતિ સુધારી લેવી જોઈએ.

૧૧ ધર્મશાળાથી તળાટીનો સુધીનો રસ્તો સાથ દુડો છતાં સુખશીલતાથી બેલગાડી કે ઘોડાગાડીનો ઉપયોગ કરી તે અવાચક જીવોને ભારે ત્રાસ ઉપનષ્ઠવામાં

૨૮૯

શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ.

આવે છે તે જોઈ હ્યાણુ લુયોને કંપાડી છુટે છે. એજ લાઈ જેણો દીલમાં હ્યા ધરે તો પેલા લુયોને સહેને હું અ ઓષ્ઠું થાય. શાણું જાત્રિકો ધારશે તો એટલું અવશ્ય કરી શકશો.

૧૨ યાત્રિકોએ અરસપરસ એટલી બધી સહાનુભૂતિ હાણવવી જોઈએ કે, રેલવેના ડામાં ઐસવા કે ધર્મશાળામાં ઉત્તરવા આવનાર ખીલ જાત્રિકો માટે કેટલો પ્રેમ પ્રથમના જાત્રિકોએ પ્રગટાવવો જોઈએ એ સંબંધમાં એક જુહો ઉલ્લેખ કરેલો વાંચી વિચારી તેનો આહાર કરનાર લુયોને લારે લાલ થવા સંભવ છે.

૧૩ ગમે તે વખતે અને ગમે તે સ્થળે સહિવિવેકથીજ સુખી થવાય છે.

૧૪ નિર્મણ શ્રદ્ધા, સદ્ગ્રિવેક અને શુભ કરણી વડેજ શ્રાવકપણુંની સાર્થકતા છે. તે વગરની લુખી કરણી અર્થસાધક શી રીતે થઇ શકે ?

૧૫ ખાનપાન પ્રમુખમાં મુખ્ય લાઈ જેણો ચોખાઈ રાખતા નથી અને એવાજ અશુદ્ધ આહાર પાણી પોતાના પૂજય જનોને પણ સંદેશ વગર આપે છે તેવા આચારની શિથલતાથી તેઓ જ્યાં ત્યાં વગોવાય છે અને ખાનપાનમાં સાખત શીતે ચોખાઈ રાખનારા તેમની સાથે ખાનપાનમાં સહૃકાર કરતાં સહેને અચકાય છે. વળી કચોખાઈથી ખીલ પણ અનેક ગેરલાલ થવા પામે છે, છતાં એ કઢંગી પ્રથા સુધારી લેવા પુરતું લક્ષ અપાતું નથી, એથી ધર્મથી પણ વિગોમણું થાય છે અનિષ્ટ અનાચારમાંથી તેમને બચાવી લેવા પૂરા ઉપદેશની જરૂર છે. શરીર આરોગ્ય, કુટુંબ આરોગ્ય સાચવવાના નિયમોથી પૂરા વાકેદ હોય તેમને તો આટલો ઇસારો માત્ર બસ છે.. ખાનપાનમાં બ્રહ્મતા-ગોટણો કરનાર કંઈક વસ્તુ ભારે ચેપી રોગને લોગ થઈપડી સ્વપરને લુવતા જોખમમાં નાખે છે.

૧૬ નવકારશી સંબંધ-સાધર્મીવાત્સલ્ય પ્રમુખ જમણુ પ્રસંગે ખાનપાના-દિકમાં પુરી ચોખાઈ મળે એવી તજનીજ રાણવા સ્વય સેવકો તૈયાર થવા જોઈએ.

૧૭ ચૈત્રી કાર્ત્તિકી જેવા યાત્રાના મોટા પ્રસંગે કાર્યહક્ષ સ્વય સેવકોની લારે જરૂર છે. જૈનોએ હું આગસ તળ કર્ત્વયનિષ્ટ થવું જોઈએ.

ઈતિશામ.

ઉપમિતિ ભવપ્રયંચ કથામાંથી કેટલાક વચ્ચનો.

૨૬૭

ઉપમિતિ ભવપ્રયંચ કથા અંતર્ગત કેટલાચેક ઉપયુક્ત વચ્ચનો.

(અનુવાદ કર્તા મુનિરાજશ્રી કૃપૂરવિજયલુ.)

ગતાંક પૃષ્ઠ થા. શા.

- ૮૧ સન્જનો દોષિતને પણ અકાળે તજતા નથીજ.
- ૮૨ ત્યાં સુધી ચિત્તનું સમાધાન કરી આપનાર ન ભણે ત્યાં સુધી આ લવચક્માં જીવને લગારે સુખ સંભવતું નથીજ.
- ૮૩ નીરાજી મહાશયને હુઃખસાણી દેખ કે સુખ માટે સ્પૃહ થતી નથી.
- ૮૪ બહારની વસ્તુઓ તો નિમિત્ત માત્ર છે.
- ૮૫ લક્ષ્ણશુદ્ધિન (દરિદ્રી) ને ચિન્તામણિરતન પ્રાસ થતું નથી.
- ૮૬ સન્જન-સાધુજનો કેવળ નિર્વિકારી હોય છે.
- ૮૭ પ્રાણીઓની દ્રષ્ટિ જન્માનતરની સંગતિને જાણુનાર-યાદ રાખનાર જણાય છે.
તેમકે તે પ્રિયને હેઠાને વિડસે છે અને અપ્રિયને હેઠાને બણે છે.
- ૮૮ શાન્ત આત્માઓને જે સ્વાભાવિક આંતરસુખ સંપદે છે તે હેવોને કે છન્દોને
પણ સંભવતું નથી.
- ૮૯ સાધુજનોને આત્મસ્લાઘા કરવી ધેટે નહીં.
- ૯૦ અધ્યમજનો ઉચિત આચરણ પણ કરતા નથી.
- ૯૧ ગમે તેટલું સમજાવ્યા છતાં મૂઢ જન અકાર્ય કરતો અટકતો નથી.
- ૯૨ બીજાએ કરેલું કાર્ય અણ નિષેધયું તે અનુમોદ્યું સમજવું.
- ૯૩ કૃપાળું સન્જનો પારકાં હુઃખ જોઈ (અમી) શકતા નથી.
- ૯૪ શક્તિ હોય તો સુજ માણસે પરોપકાર કરવો જ પરંતુ પરોપકાર કરવા
શક્તિ ન જ હોય તો સ્વાર્થ સાધવા બને તેટલો આદર કરવા ચૂકવું નહીંજ.
- ૯૫ પરસ્કીને સમીપે જોઈને સન્જનો નીચી દ્રષ્ટિ રાખી ચાલે.
- ૯૬ અરસપરણી અનુકૂળતાવડેજ વર-વહૂનો પ્રેમ સચ્ચવાય છે.
- ૯૭ સાધુજનો નમી પડેલા પ્રત્યે દ્વારા, દીનજનોને ઉદ્ઘારવા ઉજમાળ અને
નિસ્વાર્થ પ્રેમીજનો માટે પ્રાણાર્પણ કરનારા હોય છે.
- ૯૮ શુરૂની સ્તુતિ તેમની અમક્ષ કરાય, મિત્ર અને અંધુચોની સ્તુતિ તેમની
પાછળ કરાય, નોકર ચાકરની તારીઝ કામ કર્યી બાદ કરાય, પણ પુત્રોની
નહીંજ અને સ્વીએની પણ મૂવા બાદજ.
- ૯૯ પ્રલુનું પ્રલુલ્લ આજામાં છે.
- ૧૦૦ પ્રસ્તાવ રહીત કાર્ય વિગતણું નર આરંભે નહીં.

૨૮૮

શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ.

- ૧૦૧ પાચી જનોની કથા પણું કરી છતી પાપને વધારે.
 ૧૦૨ પાપ ધાણું કરીને હાંકવું ન રહે—ભઙેરમાં આવેજ.
 ૧૦૩ ચિન્તામણું પામી સાચવી જાણુનારને દારિદ્ર કેમજ રહે ?
 ૧૦૪ પુણ્યાનુભંગી પુણ્ય પણ સોનાની એડી જેવું કહ્યું.
 ૧૦૫ દોષદૂપી મળને શુલ ક્રિયારૂપ જળ વડે ટાળવો ઘટે.
 ૧૦૬ પૂર્વ જવના અદ્યાસ્તથીજ પ્રાચી પ્રાણીઓના અનેક જાવ વર્તે છે.
 ૧૦૭ ઉદ્યમ કરનારને અને નહીં કરનારને પૂર્વ જવમાં જેવું (શુલાશુલ) કર્મ
 ઉપાજવું હોય તેવુંજ પ્રાપ્ત થઈ આવે છે.
 ૧૦૮ જાન અને ક્રિયાયોગેજ ઝળ સિદ્ધિ થવા પામે છે.
 ૧૦૯ હઠ—આશ્રદ્ધી (વગર ધંચાચે) પણું હિત—શૈય કરવુંજ.
 ૧૧૦ અધ્યાર્થી, દ્યા, દાન, નિસ્પૃહતા, સત્ય, તપ અને ઉદ્દાસીનતા એ સધળા
 સત્ત્વની સંશુદ્ધિ કરનારા છે.
 ૧૧૧ ભારે મેરટું કામ સાધવા લાગેલાને વચ્ચમાં વિસ્તો પેહા થાય છે.
 ૧૧૨ મહાત્માઓ ભક્તિ વડે વશ થઈ જાય છે.
 ૧૧૩ અહો ! લાધુઓ ! ઉત્સાહ લાવીને ખરા ધર્મ—મર્ગમાં આદર કરે.
 ૧૧૪ અહીં જિન આગમનો ચોગ પામી સુસ્થજનોએ શીંગ સ્વ મળ શુદ્ધિ :
 ૧૧૫ મહારાયો અન્ય જનોના આનંદની વૃદ્ધિ માટે થાય છે.
 ૧૧૬ મહાપુરુષના સમાગમથી ઉત્તમ માર્ગની પ્રાપ્તિ થઈ શકે છે.
 ૧૧૭ ધર્મિયો રૂપી ચોરો મનુષ્યોનો સધગો ધર્મ અજનો ચોરી જાય છે.
 ૧૧૮ તત્ત્વવેત્તાએ ધન પ્રાપ્ત થયે છતે મૂર્ખ—મમતા અને ગર્વ નજ કરવા પણ
 સારા પાત્રમાં વિવેકથી દાન દેવું અને લોગમાં પણ દેવું.
 ૧૧૯ જે સારું કામ હો તે મૂઠ જનો નથી કરતા અને માહુ—લૂંકું કામ તો વાર્યા
 છતાં પણ શીંગ કરે છે.
 ૧૨૦ યથા તથા પ્રણ ॥ જેવું સત્ત્વ તેવા શુણ.
 ૧૨૧ નિયતિવશાત્ જે શુલાશુલ સાંપડે તેમાં હથી ઐહ કરવો નકામે.
 ૧૨૨ જ્યાં સુધી ભાણુસ નિર્દ્યાસી રહે છે ત્યાં સુધી લક્ષ્મી વેગળી વસે છે.
 ૧૨૩ જે ભાતા જડ આપણું નસીબ ઉપર વિશ્વાસ રાખી એસનાર અને સત્ત્વ પરાક્રમ
 વગરના ભાગકને જણે તેનેજ રોવું—રૂદ્ધ કરવું પડે.
 ૧૨૪ જે અહીં ધરમાં પરાબ્રહ્મ પાખ્યો તે ભાર પણું પરાબ્રહ્મ પામે.
 ૧૨૫ જે કોડો ગમે ભાદ્ય શરૂઆને જીતી શકે તે પણું તત્ત્વ જાન વગર અંતર
 શરૂઆને જીતવા સમર્થ થઈ ન શકે.
 ૧૨૬ રસના લુણ્ધ બનેલો લુલ કંઈ પણું ચેતી શકતો નથી.

ઉપમિતિ ભવ્યપ્રયંત્ર કથામાંથી કટલાક વચ્ચેનો.

૨૪૮

- ૧૨૭ રાગાદિકથી બ્યાકુલ થચેલું ચિત્ત વિષયરસમાં પ્રવર્તે છે અને વિવિધ વિષયોમાં પ્રવૃત્ત થચેલા જીવને કર્મનો સંચય વધતો જાય છે.
- ૧૨૮ લોલને અર્થ આપવા વડે, કોધીને મધુર લાખણુંવડે, કપટીને વિશ્વવાસ રાજ્યા વગર, અલિમાનીને નમત્રતા વડે, ચોરને જાપતા વડે, અને પરખીલંપટને સારી ઝુદ્ધિનો ઉપયોગ કરવા વડે, વિક્રાનો વશ કરી શકે છે.
- ૧૨૯ પંડિત જનોએ જગતમાં વ્યવહાર માર્ગનું ઉદ્દ્દિશન કરવું ન ધટે.
- ૧૩૦ પ્રાણીઓની ચિત્ત વૃત્તિઓ જુદા જુદા પ્રકારની હોય છે.
- ૧૩૧ વિદ્યા અને ધ્યાન યોગમાં સ્થિરતા જારે હિતકારી નીવડે છે.
- ૧૩૨ સફ્ફિવિદ્યાની વૃદ્ધિયુક્ત સફ્ફિધ્યાન યોગે ક્ષમાદિક સફ્ફિગુણ સેવવાવડે રાગદ્વેષાદિક ઉપદ્રવો શીધ નષ્ટ થઈ જાય છે.
- ૧૩૩ ઉદ્દાર આશયવાળા અને અભ્રત સમાન સાર હોથ આપનારા આચાર્ય ભગવંતો હોય છે.
- ૧૩૪ અહ્વાન પુરુષ શાખના વિભાગ (ઉત્સર્ગ-અપવાહ, નિશ્ચય વ્યવહાર, દ્વયસ્નેત કાળ ભાવાદિક) જાણી શકતો નથીજ.
- ૧૩૫ વિચારી કામ કરનાર અશક્ય અર્થમાં કેમ પ્રવર્તે ?
- ૧૩૬ વિષવૃક્ષને પણ વધારી જાતે તેને છેહવું અયુક્ત.
- ૧૩૭ અરેખર સંત-સાધુજનો રાગ દ્વેષાદિક વિકાર રહિત હોય છે.
- ૧૩૮ ગુરુનો વિનય સાચવવા તત્પર રહેનારી કાયા, ગુરુના ગુણ ગાનારી વાણી અને ગુરુમાં રંગાચેલું મન અરેખર પ્રશંસવા યોગ્ય છે. (સફ્ફિગુરુર શુદ્ધ દેવ સમાન સત્કારવા યોગ્ય છે)
- ૧૩૯ સંત જનો દાદ્દિષ્યતાથીજ અન્ય કૃત ગ્રાર્થના અવગણુતા નથી.
- ૧૪૦ દૈખિતમાં પણ શુદ્ધુનો આરોપકારી લેનાર અને સહુને આનંદ ઉપજલનાર અચિન્ત ચિન્તામણિ જેવો અજબ સંજળનની પ્રકૃતિનો ગુણ હોય છે.
- ૧૪૧ ગુણી જનો પ્રત્યે પક્ષપાત કરવો મહાપુરુષોને ઉચિત છે.
- ૧૪૨ પરવશતા માત્ર હુઃખ દૃપ છે. સુકૃત્યો વડે પાપ માત્ર દૂર થાય છે.
- ૧૪૩ સર્વ કંદ સત્ત્વમાં રહેલું છે. મહાપુરુષોનું અધું મહાન હોય છે.
- ૧૪૪ આત્મવશ અધું સુખરૂપ છે. લેવી ભવિતવ્યતા તેવાજ સહાયક મળી આવે છે.
- ૧૪૫ સ્વકાર્ય-સ્વાર્થની ઉપેક્ષા કરીને પરોપકાર કરવા સંતો સહેજે સદા ઉધમી હોય છે.
- ૧૪૬ સાધુજનો સ્વમે પણ સ્વકાર્યાનું સુખ વાંદતા નથી.
- ૧૪૭ સંજળનો આરંભેલું કાર્ય તળ દેતા નથી, સારી રીતે પરખી લીધેલું હોય તેજ કાર્ય સાર્દું.
- ૧૪૮ શાંકીન અર્થ છતે કાળ નિલંબ કરવાથી સુખી થનાય છે.

૧૪૯ પાપી લોકો સાથે સંખ્યા રાખવો સર્વ પ્રકારના અનર્થને પેઢા કરનાર જણુવો.
 ૧૫૦ ક્ષત (ધારા) ઉપર ક્ષાર નાંખવા જેવું કૃપાળુ સજજનો તો નજ કરે.
 ૧૫૧ ક્ષમા—સહનશીલતા—સમતા વગરના સથળા ગુણો એકલા શોભા પામતા નથી.
 ૧૫૨ જ્ઞાનીના રૂપ (આકૃતિ) થી જલ્લિ ઓળખાય છે. જલ્લિથી શુભાશુભ આચાર જણ્યાય છે. સદાચારથી ગુણો પ્રકાશો છે અને સહગુણોવડે સત્ત્વ અળકી નીકળે છે.

મુર્ખ શતક

(લેઠ મુનિરાજ શ્રી કર્મરવિજયજ મહારાજ)

- ૧ અધિકારધારી કામદાર ઉપર સ્નેહખંડ આશા રાખનાર.
- ૨ મંત્રી નિર્દ્દિય—હયાહીન હોવા છતાં નિર્દ્યિતા માનનાર.
- ૩ કૃતજ્ઞનું હિત કરી તેની પાસેથી પ્રત્યુપકારની આશા રાખનાર.
- ૪ નિર્ણય (એ કદર) ની પાસે ગુણ—લાભ મેળવવા દયાનાર.
- ૫ શરીર નીરોગી છતાં દવા હારુ કરતો રહી શરીર ઝીગાડનાર.
- ૬ શરીરે રોગીલો છતાં પથ્ય પાળવામાં ઉપેક્ષા કરનાર.
- ૭ લોલવશ ખર્ચના લયથી સ્વજન કુંટુંથી સાથે સંપ્ર રાખવાને બદલે તેમની સંગાતે કલેશ—કુસંપ્ર કરનાર.
- ૮ તથા પ્રકારના વચ્ચન ચેંગે ભિત્રથી વિરક્ત થઈ જનાર.
- ૯ ગુણ—લાલ મળવાના પ્રસંગે આગસ કરનાર.
- ૧૦ પૈસાપાત્ર છતાં કલેશ—કુસંપ્રમાં પ્રીતિ રાખનાર.
- ૧૧ કોઈ જ્યોતિષી (જેશી) ના કથન ઉપરથી રાજ્યની દયા રાખી સ્વ ઉચ્ચિત આચરણની ઉપેક્ષા કરી દેનાર.
- ૧૨ મૂર્ખ—નિટોલની સલાહ મુજબ ચાલનાર.
- ૧૩ હુર્ણિ—અનાથ—ગરીબને પીડા ઉપનાવવામાં ઘણાદૂરી લેખનાર, સંરક્ષણ કરવાને બદલે તેને સત્તાવનાર.
- ૧૪ પ્રગટ—પ્રસિદ્ધ દોષ (કલંક) વાળી સ્વી ઉપર પ્રીતિ રાખનાર—તેની સાથે અનુચ્ચિત વ્યવહાર કરનાર.
- ૧૫ વિદ્યા—વિજ્ઞાન—કળાનો અલ્યાસ કરવામાં મંદ આદર કરનાર (ઉત્સાહ વગરનો—મંદ ઉત્સાહી).
- ૧૬ અન્યાચે કમાદ સંચય કરેલ દ્રવ્યને ઉડાવી હેનાર.
- ૧૭ વિવેકશૂન્યતાવડે રાજ્યાદિક જેવો દખહયો રાખનાર.
- ૧૮ જહેર રીતે રાજ્યાદિક મોટા લોકોની નિંહા કરનાર.

मुख्य शातक.

309

- १६ हुःभ आवी पडतां हीनता अने चिन्ता करनार.
 २० सुप्ति स्थितिमां उन्मादवश हुर्गतिने विसरी जनार अने स्वेच्छा सुजप्ति
 गमे तेवां निन्दा कमें करनार.
 २१ नल्लवा तुच्छ लाक्षनी आतर हुद उपरांत खर्च करी नांभनार, लेवातुं
 देवुं करनार.
 २२ परीक्षा-आत्री करवां आतर तेर आनार.
 २३ सुवर्ष्ण सिद्धि प्रसुभ करवानी लालये पोताना पासेनी मूढी शुभावी निर्धन
 दरिद्र अनी जनार.
 २४ धातु-रसायण आधिने स्ववीर्य-धातुनो नाश करनार.
 २५ पोतानामां भोटाई भानी (कद्धी) भोटा शुभूजनोथी अतडो रहेनार
 हुपह लावी कौहिने हीसाथमां नहीं गणुनार-मह अहुंकार गर्व करी अंते
 नीचा पटकी पठनार.
 २६ कोध-कुषाय वश थर्भ आत्मघात करवा तत्पर थनार.
 २७ नित्य ज्यां लां विना प्रयोगने गमनागमन करनार अथवा जेमां कशुं वणे
 नहीं अवां नकामां काम करनार.
 २८ धा वाञ्छा छतां शुद्धनो तमाशो लेवा इच्छनार.
 २९ समर्थ-भजीया साथे आथ लीडी (लेश करी) वैर भाधी स्वशक्ति (अर्थ
 णाहिक) नो क्षय करी नांभनार.
 ३० अद्य मुढी छतां भारे भोटो (झोटो) आइंभर राभनार.
 ३१ पोताने पांडित भानी लेह अहुंकारवश ज्यां लां जेम तेम बकवाह-वाह
 विवाह-वितंडावाह करनार.
 ३२ पोताने शूरो (भहाहर) लेंगी ऐहरकार भनी कौहिनी कशी धीक (भीति)
 नहीं राभनार.
 ३३ आप स्तुति करावा वडे अन्य जनोने उद्देग करवनार.
 ३४ हांसी गर्भित (नर्म) वयनो वडेअन्यनां भर्मने लेहनार.
 ३५ नभणी स्थितिवाणा पासे स्व द्रव्य रक्षाष्ट्र्य थापणु सुकनार (अने पछी पाषुं
 न भणे तेथी पस्तावो करनार.)
 ३६ शंकाशील कार्य करवामां स्व द्रव्यनो व्यय करी हेनार.
 ३७ वगर विच्छार्यु खर्च करी नांभी पाठगथी हीसाण लेह भनमां ऐट-शोक
 करनार, अति उडाऊ अननार.
 ३८ नशीभ उपर आधार राखी स्व पुरुषार्थ तलु हेनार.
 ३९ पोते निर्धन तथा वातनो रक्षीयो अनी स्वउचित व्यवसायमां चित्त परोवी
 काम नहीं करनार.

३०२

અંત આત્માન દાક્ષાશ.

- ૪૦ માત પિતા અતિથિ પ્રમુખની ભક્તિ કરવી ભૂલી જનાર.
 ૪૧ પોતે નન્તા ક્ષમાદિક શુષ્ટ રહિત છતે કુળનો મહ કરનાર.
 ૪૨ કઠોર સ્વર છતાં (સલા સમક્ષ) ગાયન કરવા એસનાર.
 ૪૩ રૂણિના લયથી (ઉચિત) કાર્ય નહીં કરનાર. (ડરપોંક)
 ૪૪ કૃપખુતા વડે ફરિદ નેવી દશાને પ્રાપ્ત કરનાર.
 ૪૫ પ્રગટ દોષવાળા દુષ્ટ જનોની પ્રશંસા કરનાર.
 ૪૬ પોતાના અપલક્ષણ વડે સલામાંથી બહિજૃત થનાર.
 ૪૭ સંહેશા પહેંચાઉવા કાસદી કરનાર છતાં સંહેશોજ ભૂલી જનાર. (શુન્ય હૃદયનો એકાળજી હૃત.)
 ૪૮ ખાંસીતું દરદ છતાં ચોરીતું સાહસ કરનાર.
 ૪૯ જશ કીર્તિ માટે લેાજન પાછળ પુષ્કળ ખર્ચ કરનાર.
 ૫૦ પોતાની પ્રશંસા કરવા માટે થોડું જમી ડી જનાર.
 ૫૧ તુચ્છ ઝ્ણાદિક અથવા શાકાદિક ખાવામાં અતિ આસક્તિ રાખનાર.
 ૫૨ કપટલાર્યાં ચાહુ વચ્ચનથી (ખુશામતથી) છેતરાઈ જનાર.
 ૫૩ વૈશ્યાની પેરે શરૂ સાથે કલેશ-કંકાસ કરનાર.
 ૫૪ એ જણુ ખાનગી વાત કરતાં હોય ત્યાં વગર રજાઓ જનાર.
 ૫૫ રાનની મહેરખાની પામી, તે કાયમ ટકી રહેશે એમ માની એસનાર અને વખતે છેતરાઈ એસનાર.
 ૫૬ અન્યાય-અનીતિનો માર્ગ આદરી મોટાઈ (પ્રલુતા મેળવવા હૃદય રાખનાર.
 ૫૭ પોતે નિર્ધાર-દ્વયહીન છતાં પૈસા વડે બની શકે એવા કાર્ય કરવાની અલિવાધા રાખનાર.
 ૫૮ ગુમ-ખાનગી રાખવા નેવી વાત જ્યાં ત્યાં પ્રગટ કરી દેનાર. (અને પાછળથી પસ્તાવો કરનાર)
 ૫૯ જશ કીર્તિના લોલથી અન્નાયા-અપરિચિત (કાર્ય અથવા માણુસાદિક)નો સાક્ષી-જમીન-ટ્રોસ્ટી થવા રૂપ લારે જોખમ ઘેડનાર.
 ૬૦ હિત શિક્ષા (શિખામણ) આપનાર ઉપર નકસો મત્તસર (વિશેષ) કરનાર.
 ૬૧ પાત્રાપાત્રની પરીક્ષા વગર વિવેક રહિત સહુ ઉપર વિશ્વાસ રાખનાર.
 ૬૨ યથાર્થ લોક વ્યવહારને નહીં જાણુનાર (અને નહીં પાળનાર)
 ૬૩ લિક્ષુક પરોપળવી છતાં ગરમ ગરમ તાલ રસોઈ ખાવાની હૃદય રાખનાર.
 ૬૪ શુરૂપદ ધાર્યા છતાં સ્વ ઉચિત કરણી શિથિલતા-મંહ આદર રાખનાર.
 ૬૫ કુર્ક્મા-નીચ-નિન્ય કાર્ય કરતાં છતાં લગારે લગણ (શરમ) નહીં

ગ્રંથાવલોકન.

303

રાખનાર, પ્રગટપણે લાજ શરમ તળ નીચ કર્મ કરી કુલ મારનાર (અને પણ જીવન જીવનાર.)

૬૬ ડાખકુ મેઢું રાખીને એલવાને બદલે (ઘડઘડ) હસતો હસતો એલનાર, આ મૂર્ખ થતકનો ભાવાર્થ સમજુ જે ભવ્ય જનો પારકાં છિદ્ર નહી તાકતાં પોતાની ભૂલો શોધીને સુધ્યારણે તે જરૂર સુખી થશે.

ઇતિશાસ.

ગ્રંથાવલોકન.

૧ સ્પેલાંગીપ્રદીપ—પદથૈતું પ્રતિપાદન કરવાતું તેમજ જૈન દર્શનના અવલોકન માટે આ એક ન્યાયનો ઉત્તમ ગ્રંથ છે. આ ગ્રંથમાં સાત નયનું સ્વરૂપ આપવામાં આવેલ છે. જૈન દર્શનનું અવલોકન કરવા માટે સ્યાદાદ, નયવાદ અને સ્પેલાંગી આ ગ્રંથ તત્ત્વો આ ગ્રંથના લેખક મહારાજા બતાવે છે તેમ તે ધાર્ણાજ ઉપયોગી છે. જેમાંથી આ ગ્રંથ સપ્તલંગીનું સ્વરૂપ બતાવનારો છે, આ ગ્રંથમાં સાત પ્રકરણો પાડી વિષયને ધર્ણાજ સ્કૃપ્ત કરવામાં આવ્યો છે. આવા ગહન અંશેના ભાષાંતરો આવા સ્વરૂપમાં પ્રકટ થવાની જરૂર છે.

આ સભા તરફથી ધ્યાન નયમાર્ગદર્શિકા નામનો ગ્રંથ ભાષાંતર અને વિવેચન સાથે પ્રથમ પ્રકટ કરવામાં આવેલ હતો. પરંતુ આ ગ્રંથના કર્તા મહાશય ન્યાયતીર્થ પ્રવર્તિકા શ્રીમાન મંગલવિજયજી મહારાજ ઘરેઘર વિદ્ધાન હોવાથી તેમને દ્વારે ધર્ણો છે તો આ ગ્રંથ પણ ઉપયોગી થાય તે નવાઈ જેણું નથી, કટલેંક મથલે શાંકા સમાધાન, અન્યહર્શનીએંબે કરેલા આક્ષેપોના યુલાસા તેમજ જૈન દર્શન સાથે આજા દર્શનો કટલા અંશો મળતા છે તેનું વિવેચન વિગ્રહ અહુ સારી રીતે આપી ગ્રંથની રૂપના સારી અનાવી છે જેથી ગ્રંથ બહુ ઉપયોગી અનેલ છે. પ્રગટકર્તા યશોવિજયજી જૈન ગ્રંથમાણ ભાવનગર કિંમત ૦-૮-૦

૨ તત્ત્વાધ્યાન પૂર્વાદ્ય—આ ગ્રંથ તત્ત્વસાનનો હોઈ તેમાં પડ (૭) દર્શનોનું સ્વરૂપ સ્કૃપ્ત રીતે આપવામાં આવેલ છે. સંસ્કૃત ભાષાના ગાજ પુરુણોને આવા અપૂર્વ ગ્રંથના ભાષાંતરો અને વળી તે ન્યાયતીર્થ શ્રીમાન પ્રવર્તિકા શ્રી મંગલવિજયજી મહારાજ જેવા વિદ્ધાન મુનિવર્યની કલમથી તૈયાર થઈ પ્રગટ થાય તે તેના અધિકારી અને જાણુકાર માટે ઉપયોગી અને તેમાં નવાઈ જેણું નથી. આ ગ્રંથમાં સાંખ્ય, બૌદ્ધ નૈયાયિક, વૈશેષિક એ ચાર દર્શનનું સ્વરૂપ આપવામાં આવેલું છે જે ધ્યાન સરલ અને સ્કૃપ્ત રીતે આપવામાં આવેલ છે. પ્રકટકર્તા શ્રી પશોવિજયજી જૈન ગ્રંથમાણ ભાવનગર રૂ ૧-૦-૦

શ્રી લીંખડી રેતાંભર જૈન મૂર્તિપૂજાક બોડીંગ હાઉસનો ભીજા
તથા નીજા વર્ષનો રીપોર્ટ.

ઉપરોક્ત રીપોર્ટ અમેને મળાયો છે. સાધન વગર ડાલવજી લેતાં અટમી પડતાં વિધા-

થણ્ડો માટે આ શહેરમાં ઉપરોક્ત સંસ્થા નણું વર્ષથી સ્થાપન થયેલ છે. તેનો લાલ આ શહેરના અને તેની આસપાસના નાના ગામોને પણ મળે તે સ્વભાવિક છે. હાલમાં આ સંસ્થા પોતા માટે એક નવું મકાન બંધાવે છે. કેથી તે ભવિષ્યમાં સ્થાવી થશે તેમ માની શકાય છે. આ સંસ્થાના કાર્યવાહકોની ખંતથી એક સારા ઇંડ સાથે છેવટે પોતાનું મકાન બનાવી રાખી છે. તેટલું નહીં પણ બંધારણ, વ્યવસ્થા કાર્યક્રમ પણ બરેખર ચાલે છે તેમ રીપોર્ટ વાંચતાં માલમ પડે છે. આ શહેરના નામદાર ડાંડાર સાહેબ પણ આ ખાતું ડેળવણીનું હોંઠ તેના ઉપરઃસારી લાગણી ધરાવે છે જે ખુશી થવા જેવું છે. એક સારી રકમ કે જેના વ્યાજમાંથીજ આ સંસ્થા ચાલે તેવું કરવા તેની કમ્પાઈને અમો સુચના કરીયે છીએ. આવા આત્માં વિદ્યાર્થીઓની શારીરિક સ્થિતિ તેમજ વર્તન ઉપર આરીકીથી નિરંતર ધ્યાન આપવા તેના કાર્યવાહકોને જણાનીએ છીએ. છેવટે તેની ભવિષ્યમાં આખાહી ઘણ્યીએ છીએ.

મહુવા યશોવૃદ્ધિ જૈન આળાશ્રમનો રીપોર્ટ.

સં. ૧૯૭૩ થી સં. ૧૯૭૬ સુધીનો નણું વર્ષનો રીપોર્ટ ઉપરોક્ત સંસ્થાનો અમોને મળ્યો છે. મહુવાની આસપાસના નાના નાના ગામોમાં જ્યાં ડેળવણી લેવાના સાધનનો અભાવ હોય છે લાં પાસેના મોટા ગામમાં માધ્યમિક અને ઉચ્ચ ડેળવણી લેવાના સાધન તરફ આવું ખાતું આ શહેરમાં સ્થાપન થયેલ છે તે અરેખરી રીતે તેની જરૂરીયાત સુચયે છે. આવા રીતે ફરેક મોટા નાના શહેર અને કસણાઓમાં જરૂરીયાત છે. આવફક્ષેનની ઉત્તીતનું પ્રથમ પણાયું ડેળવણી હોવાથી આવી સંસ્થાઓ જેમ અને તેમ વધારે જોવવાનો સમજે પ્રયત્ન કરવાની જરૂર છે. આ સંસ્થાનો જરૂર આપવાનો ઉપરેશ આચાર્ય શ્રી વિજયધર્મસ્સરી મહારાજે કરવાથી શેહ કસળથંડ કમળશીની ઉદ્ધાર મહદ્ધી તે શરૂ થયેલ છે. તે શહેરના અન્ય બંધુઓએ પણ તેમાં ફળો આપ્યો છે, એકંદર રીતે તેની વ્યવસ્થા, બંધારણ વગેરે યોગ્ય છે અને કાર્યની ચોખ્યાંદ્ર છે જેથી તેના કાર્યવાહકોની ને કાળજીનું પરિણામ છે. અમો તેની ઉત્તીત માણીએ છીએ.

શ્રી ભાવનગર જૈન વિદ્યાર્થી ડેળવણી ઇંડનો રીપોર્ટ.

ભાવનગર જૈન કુવકસંદળ ને જે કાર્ય કરી રહેલ છે તેમાં આ ડેળવણીને ઉત્તેજનનું કાર્ય જે એક અરેખર ઉપરોક્ત અને સુખ્ય છે. આ તેનો પ્રથમ વર્ષનો રીપોર્ટ છે. ગુજરાતી ચોથા ધોરણુથી મેટ્રીક સુધી લાણુતાં વિદ્યાર્થીઓને રકોલરશાખ આ વર્ષમાં આપવામાં આવેલ છે. વળા તેની નહેંચણી અરાધર ચાય તેને માટે હિરેકરરી પણ કરેલ છે સાથે શારીરિક તપાસ કરી તે આગડાના વડીલોને સુચના પણ કરેલ છે જે પ્રયત્ન અરેખર અગત્યનો હોછ તે કાર્ય અંત પૂર્વક થયેલું નેચું શકાય છે. ધાર્મિક અભ્યાસ માટે રીપોર્ટમાં સંતોષ જણાવેલ નથી તેને માટે અત્ય ચાલતી શ્રી વૃદ્ધિયંહલ નૈન પાઠશાળાને જવાખરાર ગણી છે તે ચોગ્ય છે. આ આમી માટે અત્યના શ્રી સંખની કમ્પાઈમાં પણ તે શાળાની જુની કમ્પાઈમાંનો ફરદ્દાર કરવા, ડેટલોાં વ્યવસ્થાક્રમ ફરદ્દાર અને તેને ઉત્તાદ્ધાર્યે લઈ જવા ફરદ્દારો કરવા તે કમ્પાઈના અમુક આગેવાનોને કહેવામાં આવતાં આ શાળા શ્રી સંખની માલેકીની જતાં તે વખતે પોતાની માની જોરહુકી ચલાવી તેમાં કાંઈ પણ ફરદ્દાર કરવાને કે તે ચલાવી શકે, ધ્યાન આગામી

वर्तमान समाचार.

304

शड तेवा क्राईने सोंपवाने डे क्राई पणु जतनो इरक्कर करवाने ते कभीना अमुक आगेवानो तैयार नथी अने छिंचता नथी. आ संभवामां हाल वधारे लभवानी ज़र नथी, परंतु आ शाणानी ते भामी भाटे आ मंडण पोताने त्यां ते शरु कराववा छिंचा राखे छे तेने बदले आ आलती पाठशालाने थोऱ्य मार्जे लम ज्वा प्रथल करें एवुं अमो सुचवाये छीये. आ मंडणना दोक्करशाप वि. शर्य भाटे अमो तेमने घन्यवाह आपाये छीये.

वर्तमान समाचार.

पालीताण्या श्री यशोविज्य जैन गुरुकुणाना नवा मुकामने भुद्धु मुकवाने थयेल अव्य भेणावडा अने भहोत्सव.

पालीताण्या आते आलता आ यशोविज्यज्ञ लेन गुरुकुण ज्ञे के रेषनना नक्कु आवेल छ. तेनु जुनुं भक्तान अर्थ थध थेले होवाथी तेमज आ गुरुकुणनी विद्यार्थीयो लण्डुवा भाटे आमभां हर रथेने स्कूलमां जतां होवाथी, उनाना तथा ओमासामां पडती विटंअनाने लधने तेमज धार्मिक शिक्षणमां पडती अगवडताने लमने स्वतंत्र निशाण स्थापन करवानी होवाथी आ संस्थानी कभीनीयो एक भक्तान के जेमां विद्यार्थीयो रही शड अने निशाण पणु रही शड तेवुं अव्य (सुख शांति) वाणुं भक्तान तैयार करेक होवाथी तेनुं वास्तु (अवेश) भहोत्सव वैशाक वही १०ना रोज धार्मिक किया प्रभाणे दुंख स्थापना वगेरे करी, तेमज वैशाक वही ११ ना रोज सवारमां निशाण स्थापना करवानुं मुहूर्त होवाथी श्री यतुर्विधि संघ समक्ष प्रथम परमात्मा गुरु जान अने सरस्वतीनुं विधि सहीत पूजन करी वास क्षेप लध प्रथम धार्मिक पठी निशाणनी गुजराती चोथी ओपराथी छंगेल पांचमा धोरणु सुधीना वर्ग वार अब्यास शड करवामां आव्यो होतो, आ हिव्से पालीताण्याना नेकनामदार माहाराजन साहेबना मुखारक हस्ते भक्तान ज्ञावाववानी शुल्क किया थवानी हती, परंतु अकर्मात अड्यणु आपी पहोचवाथी आ कभीना ग्रमुख शेक छुव्याचूं हलार्ह धरभयह जवेरीना मुखारक हस्ते भुववानी किया करवामां आपी हती. जे वर्षते आ संस्थानो दुंक रीपोर्ट तेमज पालीताण्याना नेकनामदार शंकार साहेबनुं लापणु वगेरे भेणावडा समक्ष वांचवामां आव्युं हतुं दुंक जेमां नेकनामदार माहाराजन साहेबनी आ संस्था परे प्रेमभयलागणुनु दिग्गर्हनयतु हतु. वैशाक वही १०ना रोज विद्यार्थीयोनी धार्मिक परिक्षा देवायेली क्येही धनामनो भेणावडा पणु करवामां आव्यो होतो. आ त्रिये मांगव्य हिव्से ए परमात्मानी पूजन लण्डुववामां आपी हती. शत्रिना भावना थती हती. स्वामीवात्सत्य पणु करवामां आव्या होता. मुंधर्द, लावनगर अने रथानिक कभीनीना सलासहो तेमज अन्य भालार गामना गुहस्थ्योये हाजरी आपी लाल लीयो होतो. निशाण ज्ञाववानी किया अहुज सारी रीते हृष्णना पूर्णु आनंद्यो हितम अकारनी कियाथी थयेल होवाथी प्राचीन गुरुकुणानी अंभी थती हतीके जे वर्षतनो देखाव अपूर्व अने ऐच्याण्डारक होता ए रीतेनी मांगव्य किया करवामां आपी हती. आ संस्थानी कभीनीनां आर्यवाहको पूर्णु उत्साही होवाथी शेषा वर्षतमां स्वतंत्र विद्यालय उद्योग शाणा विगेरे हितम झार्यो करी शडक छ. जेने भाटे अमो तेमने घन्यवाह आपाये छीये, आ संस्थानी लविष्यमां संपूर्णु उन्नति अने आव्या हो धार्यकीये छीये. ज्ञे के ज्ञैन अध्युम्नाने तन जान भनरी भद्र आपवा नम सुवना कहीये छीये.

३०६

श्री आत्मानंह प्रकाश।

ज्ञव हयानो स्तुत्य प्रयास।

पुण्या अद्वितीया शिर्सु इष्ण जामभां वैथाक शुद्ध ४ नी हेवीनी यात्रानां हिवसे हजारो विक्रा
आनेता त्रास उपने तेवा रीते भेग अपाय छे जेथी ते अंध कराववा त्यांना “ अवद्या असारक
मंडवे ” उपदेश आपी लाशे पगे लागी आ वर्खते तेवा भेग आपतो अंध कराव्यो छे आठ-
भासथी आ मंडण तेवा प्रयत्न करे छे. आ अद्वितीया वर्षे स्थगे तेवा त्रास दायक लोग धर्मना
ज्ञाने अपाय छे जेथी ऐ चार मुनि महाराज विहार करी अने पधारी उपदेश आपी आ
मंडणने महात्म उरेतो धर्मा ज्ञानो लोग अपातो अंध थरो ते वर्खते पटेल केळी अने अन्य
लोडा ऐ वर्षीय महेनत अंध करावा लीधी छे तो शुजरात कार्तियावाडमांज भाव विचरनारा के
अंडेकूज स्थगे लांगो वर्खते रहेनारा के ज्ञव हयाने वलाली गणनारा हे मुनिमहाराज अंव पधारो
तमारो ते धर्म संलग्नो उपदेश आपी अमारा कमने जबही महात्म. आपो अनी रीते अमेने
आरामतीना रहीश शेठ कस्तुररंह रायचंह लघी जाणुवे छे,

**श्री जैन आत्मानंह सखा, भावनगरनो वार्षिकमहोत्सव. तथा
श्रीभानू विजयानंहसूरी आत्मारामजु महाराजनी ज्यांती.**

चालता भास केट शुद्धी ७ ना रोज भावनगरभां आ सखानी वर्षीयां निमिते अने केट
शुद्धी आठभना रोज श्री सिद्धायज्ञल उपर स्वर्गस्थ महात्मा श्रीमह विजयामंहसूरि (आत्मा-
रामजु महाराज) नी स्वर्गवास तिथि निमिते नींवे मुनज्ञ महेनतसो करवामां आव्या हता.

१ श्री जैन आत्मानंह सखाने स्थापन थर्या पर्याश वर्ष पुरा थाई लवीशमुं वर्ष शर
थवाथी आ मासनी शुद्धी ७ ना रोज सखानो वर्षीयां होवाथी आ उतम प्रसंगने भाव प्रथम
आमंत्रणु पत्रीकाओ छपावी बाहर गामना मेघरोने मोक्षवामां आवी हता.

केट शुद्धी ७ ना रोज दूरवर्ष मुनज्ञ वार्षिक महोत्सव सखाना महानने ध्वनपताका
तोरणथी शेषुगानी तेमां प्रथम स्वर्गवासी मूलत्यापाह गुडराजत्रीनी ज्यी पधरावी मुनिराज श्री
वक्षलविज्ञयल महाराज कृत श्री दृशीमंडवनी पूजन लक्ष्माववामां आवी हती; के वर्खते
मेघरो उपरांत अन्य गृहस्थाए पशु सारी संभ्यामां लाजरी आपी हती. अने
स्वामीवात्सल्य पशु वेश छीरागलाई ज्वेरयंह तरक्षी करवामां आवेल हतु. त्यार भाव केट
शुद्धी ७ ना रोज सांजनी देनमां आ सखाना सखासदो श्री सिद्धायज्ञल गया हता.

२ केट शुद्धी ८ ना रोज सवारना श्री सिद्धायज्ञलना दुँगर उपर मेडी दुँकभां ज्यां
स्वर्गवासी उक्त महात्मानी भूति स्थापन करवामां आवेली छे त्यां गिरिराज उपर श्री आहित्यर
भगवान, श्री पुंडरिकजु महाराज, श्री शांतिनाथल महाराज, पांडुका अने श्री आत्मारामजु
महाराजनी भूतिने सुंहर आंगी स्थवामां आवी हती. अने यात्रा पूजन, भावना वगेरे उतम
कार्यो करवामां आआ हता. तेमज श्री नवाल्लुं प्रकाशी पूजन (मुनिराज श्री वक्षलविज्ञयल
महाराज कृत) लक्ष्माववामां आवी हती अने स्वामीवात्सल्य पशु करवामां आव्युं हतु. ऐ
रीते गुडराजली ज्यांती उव्ववामां आवी हती. आ केट शुद्धी ८ नी ज्यांतीनो सखालो अर्य
आ सखाना श्री जमनगर नीवासी मानवंता लाईइ मेघरो शेठ मोतीयंहलाई हेमराज झवेरी-
ऐ उदारताथी आप्यो हतो. भावनगरभां थेल सखानी आ वर्षीयां वर्खते गुडराजिताना
अर्यभां अत्र श्रीराजभान प्रवर्तकल महाराज श्री कांतिजियल महाराज वगेरे मुनि
महाराजग्येत्वे गाण लाहा गुडराजित हती हती.

जयन्ती उत्सव,

आज ज्येष्ठ शुक्र अष्टमी संवत् १९७८ तदनुसार ता. १३ जुन सन १९२१ को अम्बाला शहरमें अखिल धैताम्बर जैनोंकी दुकानें बन्द रहीं। और श्री आत्मानंद जैन सभामें श्री मुनि विजयानंदसूरि महाराजका जयन्ती उत्सव मनाया गया।

प्रातःकाल श्रीलाला चाँदनमलजीने मुनि महाराजका संक्षिप्त चरित्र पढ़कर मुनाया, और आपने कहा कि उक्त महाराजके शोकमें कैबल दो अश्रु ही नहीं बहाना चाहिये, अपि तु उनके बतलाये हुए सत्यमार्गपर चलकर मुनि महाराजकृत उपकारोंसे उत्तीर्ण होना हमारा कर्तव्य है।

तदनन्तर पं. ब्रह्मदत्त शास्त्रीजीने मुनि महाराजका संस्कृत स्तोत्र तथा हिन्दी स्तोत्र मुनाया (जो कि अन्यत्र प्रकाशित हैं)।

तत्पश्चात् जैन हाइस्कूलके विद्यार्थी शालिश्रामने बड़ी मधुरवाणीसे भजन गाये। एवं विलायतीराम विद्यार्थीने ‘जैन धर्मकी प्राचीन तथा आर्वाचीन दशा’ विषयक निबन्ध पढ़ा।

तदनन्तर जैन हाइस्कूलके सुयोग्य अध्यापक विलायतीलालजीने शेर (उर्दू कविता) पढ़ी।

सायंकाल पं० ब्रह्मदत्त शास्त्रीजीका व्याख्यान तथा अन्य कितने ही सज्जोंके व्याख्यान तथा भजन हुए।

मन्त्री श्री आत्मानंद सभा—अंबालाशहर

गुरु स्तुति.

कालांकवसुचन्द्राके ज्येष्ठमासे सिते दले ।

प्रतिपद् गुरुवारे सः गुरुरायान्महीतले ॥ १ ॥

यस्मिन् गर्जति संसदि प्रवदिनो दुर्वादवादा जनाः

भेजुः कौशिकवेषमन्बरमणौ दीप्ते दिवावान्तरे ।

सोऽष्टम्या दिवसे विहाय भुवनं निर्वाणमाप्तः पदं

न्यायाम्भोधिमहामुनीन्द्रिविजयानन्दाभिधः सूरिगट् ॥२॥

सिद्धान्तानखिलान् खलःनपि बुधो योऽयोधयद्धंशधीः

दीक्षां नारिनरान्नतान्प्रददे श्रीजैनघर्मस्य च ।

सोऽष्टम्या दिवसे विहाय भुवनं निर्वाणमाप्तः पदं

न्यायाम्भोधिमहामुनीन्द्रिविजयानन्दाभिधः सूरिगट् ॥३॥

३०८

श्री आरभानंद प्रकाश.

ज्ञानं यो जगतोऽपहाय वितरं तेने प्रभां संतरं

हार्नल् यस्य कुशाप्रतीविषणां निर्वर्ण्य पाणिन्धमः ।

सोऽष्टम्या दिवसे विहाय भुवनं निर्वाणमाप्नः पदं

न्यायाम्भोधिमहामुनीन्द्रिजयानन्दाभिधः सूरिराट् ॥ ४ ॥

जैनानां स शिरोमणिगुरुवरां विद्वत्समाजाप्रणीः

जैनोद्घारधुरन्धरो मुनिवरो कृत्वा महीं कबराम् ।

सोऽष्टम्या दिवसे विहाय भुवनं निर्वाणमाप्नः पदं

न्यायाम्भोधिमहामुनीन्द्रिजयानन्दाभिधः सूरिराट् ॥ ५ ॥

श्री विज्ञानंद स्तव.

क्षनिय मुखें रत्न लैन भत्ते तुम रक्षक,
जय जय विज्ञानंद शत्रुओं ला हितअरी,
जय जय यतिवर सकल शत्रुओं तत्पत्ताता,
यद्यपि तुमारी भेनादारिणी भूति नहीं है,
अथष्ठित छी स्मृति चिह्न तुमारे अने दुःखोंहैं.
देवनिक्षितन भूरि आपने अनवाएं हैं,
लैनधर्मों लो अला गया था अस्तायलमें,
नहीं आपड़ो याह डली थी अपने ज्ञानडी,
पक्षपाताथ लेश आपमें नहीं रहाया,
आद्यकालमें यद्यपि पिता थे त्वर्ग सिधारे,
भक्तगण्डुने था यद्यपि आपड़ो आइत सताया,
नहीं तुम्हे लयभीत डली अवधी अवतासे,
रीर्नलूने नंत लैन धर्म पर प्रक्ष किये थे,
होकर छपित तुमसे वह गोरांग भेषाद्य,
रविसम आग्रह ध्यात नाश करने वाले हों,
मुनिवर तुमने सहेंद्रोंका नाश किया है,
अभिलधभोग्यार्थं परिपत् थी चिकागो हेशमें, आया वालांसे था निमंत्रण आपड़ो मुनिवंशमें
अत ऐव आप गये नहीं थे ऐह इस यनमें, मसिआतडा श्री लैनमतमें उपेक्षि होय महान हैह
ऐने थे तव वीरयंद राधवलु किस विधि, सूर्यकलासे तुम चंद्रमा निशमें किस विधि,
रसनामें अभ शक्ति नहि है अधिका मुनिवर, किसमें गावे अरित आपड़ो यह क्षवि डिकर १०

बहादुर शास्त्री

अमारी सभानुं ज्ञानोऽधार आतुं.

- | | |
|---|--|
| १ सुमुख नृपाहिमित्र चतुर्भुक्तया शा. | १२ विजयहेवस्तुरि महात्म्य. |
| २ लैन अवैद्युत सटीक | १३ लैन अंथ प्रस्तित संश्छुद्ध. |
| ३ लैन औतिष्ठासिक गूर्जरूप रास संश्छुद्ध. | १४ लिंगात्मासन स्वेषण (दीक्षा भाष्य) |
| ४ प्राचीन लैन लेखसंश्छुद्ध द्वितीय लाग | १५ धातु पारायण |
| ५ अंतगुडशांगसूत्र सटीक लक्ष्य निवासी
ज्ञेन उज्जमण्डेन तथा उरक्षारण्डेन तरक्ष्य | १६ श्री नंदीसूत्र-श्री दरिभद्रस्त्रिकृत दीक्षा
साथे शुद्धारीवाणाशेषमेतीय-सुरय-तरक्ष्य |
| ६ श्री कृष्णसूत्र-कीरणावधी शेष दोबतराम
वेण्यायंदा पुत्ररत्न रवृप्रयंद्वाध तथा ते
मनाधर्मपत्नियाध्युनीयाधनीद्रव्यसहाययथी | १७ श्री अनुत्तरोववाई-शा. क्षयराभाष नेम
यंद अंबातवाणा तरक्ष्य |
| ७ पट्टस्थानक सटीक. | १८ गुणमाणा (लापांतर) शेष दुष्कल्प देवाल
रे. कर्यलीया-नवसारी. |
| ८ विश्वमि संश्छुद्ध. | १९ उपदेश सभातिका दीक्षातुं (सापांतर) |
| ९ संस्तारक प्रक्षीर्णुक सटीक. | २० श्री विभलनाथ चरित्र " |
| १० आवक्षिर्भविष्य प्रक्षरा मटीक | २१ दानप्रदीप " |
| ११ विजयय-देवणी चरित्र प्राकृत | २२ संभोध सितारी " |
| नंबर २०-२१-२२-२३ ना अच्योभा | २३ धर्मरत्न |
| महानी अपेक्षा छे. | २४ युद्धतत्व विनिश्चय शेष परमानंदास
रतनल जोधावाणा, दाव मुंजाध. |

श्रीमान् उपाध्यायलु यशोविजयलु महाराज हृषी

श्री अध्यात्म भतपरिक्षा अंथ.

(भूषा साथे भाषांतर)

सतरभाँ सैक्षमाँ के जयारे लैन हर्षननी अंदर पडेल लिज लिज शाखाभाँ धर्म संबंधी
अनेकविवाहो चालता हुता, ते हरभ्यान आण ज्ञेने सत्य शु? अने शुद्ध तत्वे शेमाँ छे !
ते शोधवाणी मुश्केली ज्ञानाता तेवा ज्ञेने उपकार करवा निमितेज आ अध्यात्मिक अंथनी
उक्ता महात्माए रवना करी छे. शुद्ध तत्वना स्वीकारनेज आपु पुरुषो अध्यात्म कहे छे, वेथी
तेनी परिक्षा करीने अहं उपकार नेहाये तेज आ अंथमां भतावाभाँ आवेद्यु छे. अंथनी शह-
आत्मां अध्यात्म काने कहेवुं तेनी व्याध्या साथे नाम-स्थापना-प्रव्य अने भावः ऐ चारभाँ
मोक्षना कारणु अवा भाव अध्यात्म विषे विवेदन करी तेनी अंदर शान अने चारित्रनी उच्च
घटना केवी रीते थाई शके, ते भाटे महात्मा अंथकार महाराजे युक्तिपूर्वक भताव्युं छे, ते साथे
अध्यात्मनी सिद्धि क्यारे थाई शके तेने अगे शंका सभावान पूर्वक अन्य अच्योभा प्रभाव्यु आपी
पुरवार करी भताव्युं छे ! त्यारपाइ जेमना भतनो विचार कर्तव्य छे तेवा नाम अध्यात्मी के
ने शुद्ध अध्यात्मी तेमनी हुक्कित केवण जुहा अने विरोधी छे अने शुद्ध भावअध्यात्मन
मोक्षनुं कारणु छे, तेनुं स्फुट विवेदन श्रीमान् अंथकार्ये असरकारक रीते भताव्युं छे. अध्या-
त्मना अपी अने दसीकने आ अपूर्व अंथ आस पहल पाठन करवा ज्ञेवो छे. डिंभत ३.०-४-०
प्राप्तेज शुद्ध. अमारी भासेथी भगवो.

विचार अने कार्यं

“ नेत्र ज्ञानमाथी इण अने ज्ञानमाथी पाण्डी तेम विचारमाथी कार्यंनो उद्भव थाय छे. कार्यंनो उद्भव आरण्य वगर ऐकाएक थतो नथी. ते तो लांबा काण सुधी शुम रीते वृद्धि पामेला कारण्यातु इण होय छे अने शुम रीते वृद्धि वस्तथी के बणनी ज्ञानवट थती हती तेनुं परिणाम ते होय छे. के जमीन तथा ध्वामां केटवाक काण सुधी शुम रीते वृद्धि थर्द ज्ञानमाथी इण अने ऐकामाथी पाण्डी नीकल्यां ते, ते जमीन तथा ध्वामां कुहरती कियाना संप्रेषनुं परिणाम होय छे. तेज प्रभाषे केटवाक काण सुधी ज्ञेवा विचारो मनमां घोणाया करता होय तेवा विचारेनां इण सारां या भाड़ बढ़े छे, ओटले गोताना विचार होय तो सुन्दर कार्यो अने पापना विचारो होय तो आपां कमी इषी इण नीपछे छे. ”

“ के भनुष्यने भीज लेझो अडग निश्चयवाणो माने छे तेमज ते ज्ञते पश्च ते प्रभाषे माने छे तेवो डोर्ड मनुष्य आरे लालच्यते लीघे अधीर आपमां ऐकाएक इसाय त्यारे के विचारमाथी ते कार्यं निष्पत्त थयुं ते विचारेनी शुम ओल्योने खुल्लो करवामां आवे तो तेनी अधीरगति ऐकाएक अथवा वगर करणे थर्द नहोती ओम समन्य छे. आ अधीरगति तो इक्का समाप्ति इपे, आख देखाव इपे अने वृद्धि वर्षोंथी के विचारो मनमां घोणाया करता हुता तेना आभर परिणाम इपे हती. ते भनुष्ये गोतानां मनमां कुविचारने ओक वस्त आववा दीधे अने आज तथा वीज वार तेने ववावी लाई गोतानां कल्पयमां वास आप्यो. धीमे धीमे आववा विचार करवानी तेने टेव पडी; आह तेनुं सेवन करी, मनमां आतां हुमानी, पुष्टि आपतो गयो. ए प्रभाषे तेवा विचारेनी वृद्धि थती गष्ठ, जेथी तेमां ओटली हुता अने अल आव्या के तेने तेनी संविभागा अने तेथी ते विचार स्फुरी नीकणा कार्यं इपे देखायो. हरेकां लब्ध महाननो पायो, पाण्डीने लीघे पामे धीमे भाण्डार्ह ज्ञतो होय जेथी ते सूक्ष्म छिवटे ज्ञेव पडी लय छे तेवी रीते के आणु निश्चयवाणो मनुष्य गोतानां मनमां हुष्ट विचारेने शुभस्वा हे छे अने गोतानी साधने शुम रीते घोडा लगाडे छे ते आभरे पापा वगर रहेतो नथी. ”

“ ज्यारे आप कर्मना अने लेजना विचारेनो मनमां उद्भव यवाथी स्वाभाविक रीते तेनुं परिणाम तेवुं आवे छे एवुं भनुष्यने समन्य छे त्यारे तेवा विचारो हुर करवानी तेने सुज पडे छे अने ते हुर थर्द शक्षे अम ते माने छे अने तेनी मान्यता नहोती गोती भरी पडे छे. भाटे क्के डोर्ड मनुष्य गोतानां मनमां निर्दोष शुभ विचारेने आववा हुध ते उपर अनन करी पुष्टि आप्या करे तो तेवा विचारो, आराय विचारेनी मांडक वृद्धि पामे अने धीमे धीमे तेनुं अप वपे अने छिवटे अवा संजेगो आव्या यहेके ते विचारो परिपक्व थर्द धारेहुं शुभ काये पार पडे छे. डोर्डपछु भाती वात आभरे प्रसिद्धिमां आव्या वगर रहेतो नथी. तेमज के कांध विचार मनमां सेववामां आवे ते सुष्ठिनी स्वाभाविक प्रेरक शक्तिनां अणे तेना शुलु दोष प्रभाषे सारां या भाड़ां कर्म इपे आभरे अहार आव्या विना रहेता नथी. धर्मगुड अने विषय लंपट अन्ने गोतपोताना विचारेनां अरिण्यामे ते स्थितिमे पहोचेवा होय छे अने लाल तेव्यो. के स्थिति नोगवे छे ते स्थिति जे विचारइयी भीजे तेमणे गोतानां कल्पयियी भगीरथामां रोपां अथवा वाव्यां अने पाण्डीथी पाण्डी आप्यने उछेरी डेणां तेना इण इपे छे. ” “ सुनहरी सुप्याध ”